हिन्दी दैनिक

R.N.I.NO.UPHIN/2014/59804

प्रयाग दर्पण

वर्ष : 09 | अंक : 59 | प्रयागराज, मंगलवार 30 मई , 2023 | हिन्दी दैनिक | पृष्ठ–4 | मूल्य : 3 रुपया

पहलवानों को संसद भवन के उद्घाटन के दौरान हंगामे के खिलाफ चेताया गया था : प्राथमिकी

नई दिल्ली। पहलवानों के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी के अनुसार उन्होंने पुलिस की उस चेतावनी को नजरअंदाज किया जिसमें कहा गया था कि नए संसद भवन के उद्घाटन के दौरान हंगामा करने से ''राष्ट्र की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचेगा और इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। लेकिन उन्होंने इस चेतावनी पर गौर नहीं किया और मार्च निकालने की कोशिश की। पहलवानों को रविवार को उनके मार्च के दौरान हिरासत में लिया गया था, हालांकि बाद में सभी को रिहा कर दिया गया। ये पहलवान भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के प्रमुख बश्जभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग को लेकर 2 महिला पहलवानों के यौन उत्पीड़न का आरोप 3 अप्रैल से जंतर–मंतर पर प्रदर्शन कर रहे थे। प्रदर्शनकारी पहलवानों ने बश्जभूषण पर एक नाबालिग सहित कई महिला पहलवानों के यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है। प्राथमिकी के अनुसार, कम से कम 15 सुरक्षाकर्मी रविवार को उनके और पहलवानों के बीच हाथापाई के दौरान घायल हो गए। पहलवानों ने जंतर–मंतर पर ही विरोध जारी रखने के पुलिस के अनुरोध को भी नजरअंदाज किया। ओलिंपिक पदक विजेता साक्षी मलिक ने रविवार को हिरासत में लिए जाने के बाद ट्वीट किया था, '' इस देश में तानाशाही नहीं, बल्कि महिला पहलवानों का सत्याग्रह होगा। पुलिस ने बताया कि नयी दिल्ली जिले के बाराखंभा थाने में तैनात हेड कांस्टेबल माधव की शिकायत पर साक्षी, विनेश फोगाट, संगीता फोगाट, बजरंग पुनिया और अन्य के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई। प्राथमिकी के अनुसार, विरोध कर रहे पहलवानों के साथ हाथापाई के दौरान माधव घायल हो गए थे। पहलवानों को हिरासत में लेते समय उनके बीच हाथापाई हो गई थी। प्राथमिकी के अनुसार, विरोध करने वाले पहलवानों के करीब तीन किलोमीटर दूर नए संसद भवन की ओर मार्च करने की आशंका के बीच निहत्थे पुलिस कर्मचारियों को विरोध स्थल जंतर मंतर पर तैनात किया गया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को नए संसद भवन का उद्घाटन किया। प्राथमिकी में कहा गया है कि सुबह करीब साढ़े 10 बजे विरोध करने वाले पहलवानों बजरंग पुनिया, विनेश फोगाट, साक्षी मलिक और अन्य ने एक संवाददाता सम्मेलन कर घोषणा की कि वे पूर्वाह्न साढ़े 11 बजे नए संसद भवन के बाहर 'महिला सम्मान महापंचायत आयोजित करेंगे। उन्होने दूसरों से उसमें शामिल होने का आग्रह किया। संवाददाता सम्मेलन के तुरंत बाद वरिष्ठ अधिकारियों ने उनसे कहा कि देश की ''शीर्ष लोकतांत्रिक संस्था का उद्घाटन होने जा रहा है। '' यह देश के लिए गर्व तथा गौरव का विषय है और इसकी सुरक्षा तथा सम्मान से समझौता नहीं किया जाएगा। प्राथमिकी के अनुसार, '' प्रदर्शनकारियों से अधिकृत विरोध स्थल जंतर मंतर पर ही अपना प्रदर्शन जारी रखने का आग्रह किया गया। प्राथमिकी के अनुसार, लेकिन अपनी घोषणा के अनुरूप पूर्वाह्न साढ़े 11 बजे बजरंग पुनिया, विनेश फोगाट, साक्षी मलिक और अन्य ने नारे लगाए और पुलिस के पहले अवरोधकों के पास पहुंच गए। वहां तैनात अधिकारियों ने एक सार्वजनिक घोषणा प्रणाली के माध्यम से उन्हें बताया कि नए संसद भवन के उद्घाटन के दौरान किसी भी तरह की गड़बड़ी या नियमों का उल्लंघन करने से ''राष्ट्र की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचेगा जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पुलिस ने प्राथमिकी में कहा कि उनसे फिर से अपने अधिकृत स्थल जंतर–मंतर पर ही विरोध प्रदर्शन करने का आग्रह किया गया क्योंकि निर्दिष्ट क्षेत्र से परे धारा 144 लागू की गई थी। प्राथमिकी के अनुसार, '' प्रदर्शनकारियों ने बार–बार कहने के बावजूद अनुरोधों का पालन नहीं किया। वे आगे बढ़े, पहली पंक्ति के अवरोधकों को लांघ कर उन्होंने पुलिस को धक्का दिया और दूसरी पंक्ति के अवरोधक के पास पहुंचे। वहां फिर से पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन वे पुलिस तथा अवरोधकों को हटाते रहे। उन्होंने नारेबाजी जारी रखी और हमारी ओर दौड़ने लगे। अतिरिक्त बल वहां पहुंचा और बड़ी मुश्किल से उन पर काबू पाकर उन्हें हिरासत में लिया गया। रोकने की कोशिश के दौरान प्रदर्शनकारियों ने पुलिस के साथ हाथापाई की। हाथापाई के दौरान कई पुलिस कर्मियों को चोटें आईं और उन्हें लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल और राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया जहां मेडिको लीगल केस (एमएलसी) तैयार किए गए। जंतर–मंतर पर रविवार को हाथापाई में घायल हुईं महिला कांस्टेबल सहित 15 पुलिसकर्मियों के नाम भी प्राथमिकी में दर्ज हैं।

जहां वैचारिक मतभेद हैं वहां गठबंधन नहीं हो सकता : नवजोत सिंह सिद्धू

नई दिल्ली। दिल्ली के संबंध में केंद्र सरकार द्वारा जारी अध्यादेश पर आम आदमी पार्टी के समर्थन को लेकर पंजाब के कांग्रेस नेताओं के विरोध के बीच प्रदेश कांग्रेस के पूर्व प्रमुख नवजोत सिंह सिद्धू ने सोमवार को कहा कि जहां वैचारिक मतभेद हैं वहां गठबंधन नहीं हो सकता। अध्यादेश पर आप को समर्थन और लोकसभा में आप के साथ गठबंधन जैसे मुद्दों पर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात के लिए आज पंजाब कांग्रेस के नेता यहां आए हुए थे। बैठक में कांग्रेस के पूर्व प्रमुख राहुल गांधी, अमरिंदर राजा वारिंग, सुखजिंदर सिंह रंधावा, प्रताप सिंह बाजवा, हरीश चौधरी, सिद्धू और कई अन्य लोग शामिल हुए। बैठक के बाद सिद्धू से जब राज्य में 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए आप के साथ गठबंधन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने एक रहस्यमय जवाब में कहा, अगर वैचारिक मतभेद हैं तो गठबंधन नहीं बनाया जा सकता है। सिद्धू ने कहा, और मैं इसके बारे में स्पष्ट हूं क्योंकि मेरी लड़ाई सच्चाई के लिए है और मैं इसका पालन कर रहा हूं और मैं नैतिक मूल्यों से समझौता नहीं करता हूं। आज नैतिक मूल्य सबसे निचले स्तर पर हैं क्योंकि लोकतांत्रिक मूल्यों को खत्म कर दिया गया है। इस बीच, पार्टी के कई अन्य नेताओं ने कहा कि इस मुद्दे पर उन्हें जो कुछ भी कहना है, उन्होंने पार्टी नेतृत्व को बता दिया है और इसका खुलासा सार्वजनिक रूप से नहीं किया जा सकता है। दिल्ली और पंजाब के कई कांग्रेस नेताओं ने अध्यादेश के मुद्दे पर केजरीवाल का समर्थन करने का विरोध किया है। अजय माकन, संदीप दीक्षित और सुखजिंदर सिंह रंधावा जैसे वरिष्ठ कांग्रेस नेता पहले ही कह चुके हैं कि पार्टी को आप का समर्थन नहीं करना चाहिए। इससे पहले पार्टी के कई नेताओं ने खड़गे से 2024 के चुनावों के लिए आप के साथ गठबंधन नहीं करने और अध्यादेश के मुद्दे पर उसका समर्थन नहीं करने के लिए कहा।

सभी प्रमुख विपक्षी दलों के नेता 12 जून को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा बुलाई बैठक में भाग लेंगे

कोलकाता। देश के सभी प्रमुख विपक्षी दलों के नेता 12 जून को पटना में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा बुलाई गई एक महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेंगे। लेकिन पश्चिम बंगाल में कांग्रेस और वाम मोर्चा ने उस बैठक में तश्णमूल कांग्रेस को आमंत्रित करने के औचित्य पर सवाल उठाया है। पश्चिम बंगाल में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी ने एक कदम आगे बढ़ते हुए दावा किया कि 12 जून की बैठक का जो भी परिणाम हो, कांग्रेस पश्चिम बंगाल में तश्णमूल कांग्रेस का विरोध जारी रखेगी। उन्होंने कहा, पश्चिम बंगाल में हमारा आंदोलन भाजपा और तश्णमूल कांग्रेस के खिलाफ है और यह जारी रहेगा। तश्णमूल कांग्रेस वास्तव में विपक्षी गठबंधन में दरार पैदा करने के लिए भाजपा का मोहरा है। माकपा की केंद्रीय समिति के सदस्य सुजान चक्रवर्ती ने कहा कि हालांकि भाजपा के खिलाफ सभी विपक्षी ताकतों को एकजुट करने की यह एक अच्छी पहल है, लेकिन सवाल यह है कि क्या तश्णमूल कांग्रेस पर विश्वास किया जा सकता है। उन्होंने कहा, तश्णमूल कांग्रेस ने अप्रत्यक्ष रूप से भारत के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनावों में भाजपा की मदद की। संकट के समय में, तश्णमूल कांग्रेस ने हमेशा प्रधानमंत्री मोदी को गुप्त रूप से समर्थन दिया है। माकपा के राज्यसभा सदस्य और कलकत्ता हाई कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता बिकास रंजन भट्टाचार्य ने कहा कि एक महागठबंधन की जरूरत है और केवल उन राजनीतिक ताकतों को इसमें शामिल किया जाना चाहिए जो भाजपा का विरोध करे। उन्होंने कहा, बीजेपी हमेशा विपक्षी मोर्चे को भीतर से खत्म करने की कोशिश करेगी। ऐसे में तश्णमूल कांग्रेस को शामिल करना एक अच्छा कदम नहीं होगा। बल्कि, पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चा और कांग्रेस के बीच आपसी समझ के मॉडल का राष्ट्रीय स्तर पर पालन किया जाना चाहिए। हालांकि पार्टी के राज्यसभा सदस्य डॉ शांतनु सेन जैसे तश्णमूल कांग्रेस के नेताओं का मानना है कि पश्चिम बंगाल में माकपा और कांग्रेस के तर्क का कोई मतलब नहीं है क्योंकि उनकी कोई प्रासंगिकता नहीं है। उन्होंने कहा, जब पूरा देश मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को विपक्ष के नेता के रूप में मानता है, तो पश्चिम बंगाल में माकपा और कांग्रेस के नेता क्या कहते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। पश्चिम बंगाल में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि पश्चिम बंगाल में कांग्रेस का तश्णमूल कांग्रेस का विरोध महज छलावा है।

असम में नकली सोने की तस्करी के आरोप में पिछले दो सप्ताह में कम से कम 160 लोगों को गिरफ्तार किया

गुवाहाटी। असम में पिछले दो सप्ताह में नकली सोने की तस्करी के आरोप में कम से कम 160 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। असम पुलिस के एक आधिकारिक बयान के अनुसार, सबसे अधिक गिरफ्तारी लखीमपुर जिले में हुई जहां अब तक 63 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। इसके बाद सोनितपुर में 45 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। शीर्ष महिला पुलिस अधिकारी जूनमोनी राभा की इस महीने की शुरुआत में एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो जाने के बाद आरोप सामने आए थे कि वह नकली सोने की तस्करी से संबंधित एक मामले की जांच कर रही थी और उसकी मौत दरअसल योजनाबद्ध तरीके से की गई हत्या थी। डीजीपी जी.पी. सिंह ने तब कहा था कि एक महीने के भीतर असम से नकली सोने और नकली नोटों के रैकेट का सफाया कर दिया जाएगा। राभा के निर्देश पर पुलिस ने राज्यव्यापी कार्रवाई शुरू की थी, लेकिन 20 मई को नागांव जिले के कलियाबोर इलाके में हाईवे पर उनकी कार की एक कंटेनर ट्रक से आमने–सामने की टक्कर में उनकी मौत हो गई।

किसी नेता की हिम्मत नहीं कि पद मांगे, यह रिवाज कांग्रेस में नहीं : गहलोत

नई दिल्ली। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सोमवार को कहा कि कांग्रेस आलाकमान आज भी इतना मजबूत है कि कोई नेता यह कहने की हिम्मत नहीं कर सकता कि वह अपनी पसंद का पद लेगा या फिर पार्टी उसे मनाने के लिए पद की पेशकश करे। उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के साथ मुलाकात से पहले यह टिप्पणी की। मुख्यमंत्री से, सचिन पायलट को मनाने के लिए आलाकमान की ओर से कथित तौर पर पद की पेशकश किए जाने संबंधी खबर को लेकर सवाल किया गया था। गहलोत ने कहा, 'मैंने कभी नहीं सुना कि कोई नेता (पद) मांगे या आलाकमान पद की पेशकर करे। यह रिवाज मैंने कांग्रेस में नहीं देखा। आलाकमान और कांग्रेस इतने मजबूत हैंकृ और ऐसी स्थिति नहीं आई है कि किसी को मनाने के लिए पद की पेशकश की जाए या कोई नेता अथवा कार्यकर्ता यह कहे कि मैं यह पद नहीं, यह पद लूंगा। उन्होंने कहा, ऐसा कभी नहीं हुआ और कभी नहीं होगा। कांग्रेस आज भी मजबूत संगठन है और आलाकमान मजबूत है। गहलोत और पायलट सोमवार को खरगे से मुलाकात करेंगे। कांग्रेस राजस्थान में सचिन पायलट और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बीच जारी विवाद को खत्म करने के प्रयास में है। हाल ही में 'जन संघर्ष यात्रा निकालने वाले पायलट ने मई के अंत तक उनकी मांगें नहीं मानने पर आंदोलन शुरू करने की चेतावनी दी है। जयपुर में अपनी पांच दिवसीय 'जन संघर्ष यात्रा का समापन करते हुए उन्होंने भ्रष्टाचार के मुद्दे पर गहलोत सरकार पर निशाना साधा था। पायलट ने हाल में तीन मांगें रखी थीं जिनमें राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) को भंग करना और इसका पुनर्गठन, सरकारी परीक्षा के पेपर लीक होने से प्रभावित युवाओं को मुआवजा और पिछली वसुंधरा राजे सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की उच्च स्तरीय जांच कराना शामिल है।

दिल्ली मर्डर का आरोपी साहिल बुलंदशहर से गिरफ्तार, 16 साल की गर्लफ्रेंड को 20 से अधिक बार चाकू मार उतारा मौत के घाट

नई दिल्ली। दिल्ली में एक 16 वर्षीय लड़की को उसके कथित प्रेमी द्वारा कई बार चाकू मारने की घटना में, फरार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। नयी दिल्ली के शाहबाद डेयरी इलाके में अपने कथित प्रेमी द्वारा कथित रूप से कई बार चाकू मारे जाने के बाद घायल हुई 16 वर्षीय एक लड़की की मौत हो गई। पुलिस ने आरोपी साहिल को बुलंदशहर से पकड़ा है। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त, राजा बांठिया ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि आरोपी के माता–पिता मामले में सहयोग कर रहे हैं। एडिशनल डीसीपी राजा बांथिया ने कहा, आरोपी साहिल 20 साल का है। आरोपी को गिरफ्तार करने के लिए छह टीमों का गठन किया गया था जिसके बाद उसे बुलंदशहर से गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने कहा कि मृतक के शरीर पर कई चोटें थीं। राजा बांठिया ने कहा, लड़की को मृतघर लाया गया था और पोस्ट–मॉर्टम किया जा रहा है। उसके शरीर पर कई चोटें थीं। उसे 20 से अधिक बार चाकू मारा गया था। वहीं, डीसीडब्लयू प्रमुख स्वाति मालीवाल ने सरकार से उच्च स्तरीय बैठक बुलाने की अपील करते हुए कहा कि राष्ट्रीय राजधानी महिलाओं और लड़कियों के लिए बेहद असुरक्षित हो गई है एक 16 साल की लड़की को 40–50 बार चाकू मारा गया और फिर कई बार पत्थर से मारा गया जिसके बाद उसकी मौत हो गई। यह सब सीसीटीवी में कैद हो गया है। कई लोगों ने इसे देखा लेकिन ध्यान नहीं दिया। दिल्ली में अब हद हो गई है। महिलाओं और लड़कियों के लिए असुरक्षित। मैं केंद्र सरकार से केंद्रीय एचएम, दिल्ली एलजी, डीसीडब्ल्यू प्रमुख और दिल्ली सीएम के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक बुलाने की अपील करती हूं। पुलिस के अनुसार मृतक का शव गली में मिला था। पुलिस द्वारा की गई प्रारंभिक जांच के दौरान पता चला है कि वह सड़क पर टहल रही थी, तभी अचानक एक लड़का उससे भिड़ गया। पुलिस उपायुक्त (बाहरी उत्तर) रवि कुमार सिंह के अनुसार, यह पाया गया कि वह सड़क पर टहल रही थी जब अचानक एक लड़के ने उसे रोका तो उसने उसे कई बार चाकू मारा। स्थानीय पूछताछ के दौरान पुलिस को पता चला कि आरोपी और मृतक के बीच संबंध थे लेकिन कल उनका झगड़ा हो गया था। पुलिस ने कहा, आज मृतका अपने दोस्त के बेटे की बर्थडे पार्टी में शामिल होने गई थी जिस दौरान आरोपी ने इस वारदात को अंजाम दिया।

पार्टी ने कर्नाटक में जो किया उसे मध्य प्रदेश में दोहराने जा रही है : राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोमवार को कहा कि पार्टी ने कर्नाटक में जो किया उसे मध्य प्रदेश में दोहराने जा रही है। पार्टी इस साल राज्य में 150 सीटें जीतेगी। उनकी टिप्पणी मध्य प्रदेश पर एक बैठक के बाद आई जिसकी अध्यक्षता कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे ने की। बैठक में राहुल गांधी, पार्टी महासचिव (संगठन) के.सी. वेणुगोपाल, कमलनाथ, दिग्विजय सिंह, अरुण यादव, जे.पी. अग्रवाल सहित कई नेता शामिल हुए। मीडिया से बात करते हुए राहुल गांधी ने कहा, पार्टी नेताओं के साथ मध्य प्रदेश पर विस्तार से चर्चा हुई। हमने कर्नाटक में 135 सीटें जीती हैं और हमारा आकलन है कि हम मध्य प्रदेश में 150 सीटें जीतने जा रहे हैं। मध्य प्रदेश में, हम कर्नाटक दोहराएंगे और 150 सीटें जीतेंगे। इस बीच मध्य प्रदेश के प्रभारी अग्रवाल ने कहा कि सभी नेताओं ने एकजुट होकर विधानसभा चुनाव लड़ने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि नेताओं ने राज्य में सत्तारूढ़ भाजपा को हराने के लिए चुनावी तैयारियों के संबंध में पार्टी नेताओं के साथ विस्तश्त चर्चा की। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा कि पार्टी कर्नाटक की तरह कई योजनाओं की घोषणा करेगी और उन्होंने ऐसी योजनाओं की घोषणा करना शुरू कर दिया है। मध्य प्रदेश में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं।

हरिवंश नारायण सिंह नए संसद भवन के उद्घाटन में शामिल हुए, एक विवादास्पद कदम की आलोचना की गई

पटना। जद (यू) ने सोमवार को अपने सांसद और राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह को पार्टी लाइन का उल्लंघन करने और नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह में शामिल होने के लिए फटकार लगाई। इसे अपराध करार देते हुए एमएलसी और पार्टी के मुख्य प्रवक्ता नीरज कुमार ने कहा, जब नई संसद के उद्घाटन के दौरान देश के लोकतंत्र को कलंकित किया जा रहा था, सिंह वहां गए और कार्यक्रम में हिस्सा लिया। हमारे शीर्ष नेतृत्व ने पहले ही कार्यक्रम के बहिष्कार की घोषणा कर दी थी। फोटो दिखाते हुए नीरज कुमार ने सिंह से पूछा, राज्यसभा अध्यक्ष को आमंत्रित नहीं किया गया था, लेकिन आप कुर्सी पर बैठे हैं। क्या आपने कुर्सी के लिए अपना जमीर बेच दिया है? आने वाली पीढ़ी आपको माफ नहीं करेगी। ऐसे समय में आपकी उपस्थिति दुर्भाग्यपूर्ण थी। यह हमारे लिए गहरी चिंता का विषय है। पार्टी ने आपको बड़ी उम्मीद से संसद के उच्च सदन में भेजा था, लेकिन आपने कुर्सी के लिए समझौता कर लिया। नीरज कुमार के रुख पर प्रतिक्रिया देते हुए बीजेपी नेता और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हरिवंश सिंह जैसे नेता पर सवाल उठा रहे हैं। कुमार ने प्रधान मंत्री का पद हासिल करने की उम्मीद में सब कुछ खो दिया है। नए संसद भवन के उद्घाटन में शामिल होने के लिए हरिवंश जी की आलोचना करने के लिए हमें जद (यू) की निंदा करनी चाहिए। उन्होंने राज्यसभा के उपसभापति के लिए अपशब्दों का इस्तेमाल किया। हरिवंश जी का जीवन ईमानदारी पर आधारित है। वह एक विश्वसनीय व्यक्ति रहे हैं।

सम्पादकीय

सजा ही लगाएगी निरंकुशता पर अंकुश

हाल के दिनों में देश के विभिन्न भागों में गौ रक्षा के नाम पर हिंसक व्यवहार की कई घटनाएं सामने आई, जिसमें कई लोगों को जान भी गंवानी पड़ी है। निस्संदेह, गौ तस्करी करने वालों को दंडित किया जाना चाहिए, लेकिन कानून के तहत गौधन की खरीददारी करने वालों को यदि हिंसक भीड़ का शिकार होना पड़े तो यह दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जायेगा। ऐसे मामलों में पुलिस की सतर्कता और कानून की सख्ती ही किसी निरंकुश व्यवहार पर रोक लगा सकती है। ऐसे ही हरियाणा के नूंह जिले के रकबर खान की गौ तस्करी के संदेह में भीड़ द्वारा हत्या करने की घटना सामने आई थी। जुलाई 2018 में जब रकबर अपने एक साथी के साथ गौधन खरीदकर अलवर से हरियाणा लौट रहा था तो स्थानीय लोगों ने उन्हें पीटा था।

इस घटना में रकबर ने पिटाई के बाद दम तोड़ दिया था। इस घटनाक्रम के पांच साल बाद अलवर के अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश ने चार गौरक्षकों को सात साल की सजा सुनाई है। निस्संदेह, सजा ही ऐसे मामलों में कानून हाथ में लेने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाएगी। अलवर जनपद में 2017 में भी इसी तरह की घटना सामने आई थी जिसमें डेयरी किसान पहलू खान तब हिंसा का शिकार बना जब वह साप्ताहिक बाजार से मवेशियों को नूंह में अपने गांव ले जा रहा था। लेकिन पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में छह आरोपियों को सत्र अदालत ने बरी कर दिया था। आरोपियों को पुलिस जांच के आधार पर संदेह का लाभ मिला था। अदालत ने भी जांच में गंभीर खामियों की ओर इशारा किया था।उल्लेखनीय है कि रकबर खान के प्रकरण में आरोपियों को सजा सुनाने का मामला तब सामने आया है जबकि राजस्थान पुलिस ने बहुचर्चित जुनैद व नासिर हत्या मामले में मानू मानेसर समेत 21 लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। दरअसल, यह जांच भिवानी जिले में इन दोनों के शव पाये जाने के बाद शुरू हुई थी। तब भी आशंका जतायी जा रही थी कि पुलिस की चूक के बाद इस जघन्य अपराध को अंजाम दिया गया था।

वहीं इस बात में संदेह नहीं कि कथित राजनीतिक संरक्षण और पुलिस की ढिलाई के चलते ही गौरक्षक कानून अपने हाथ में लेने लग जाते हैं। इसमें दो राय नहीं हो सकती है कि गौधन की रक्षा की जानी चाहिए। लेकिन कानून हाथ में लेने का अधिकार किसी को नहीं है। देश में दोषियों को सजा देने के लिये एक पूरा कानूनी सिस्टम बना हुआ है। आशंका जतायी जाती रही है कि गौरक्षा के नाम पर असामाजिक तत्व डेयरी किसानों व पशु व्यापारियों के खिलाफ हिंसा करते हैं। निस्संदेह, तस्करों से निबटने का अधिकार सिर्फ पुलिस को है न कि हिंसक भीड़ को। वहीं हिंसा का सहारा लेने वाले समूहों पर शिकंजा कसने की जिम्मेदारी कानून लागू करने वालों की है। इसमें दो राय नहीं कि गौरक्षकों के नाम पर सक्रिय असामाजिक तत्वों तथा उन्हें संरक्षण देने वालों पर शिकंजा कसना जरूरी है।

नीति आयोग और राज्य सरकारे

दिल्ली में ही राष्ट्रीय नीति आयोग की बैठक से ग्यारह राज्यों के मुख्यमन्त्रियों का नदारद रहना यह बताता है कि राज्यों के संघ के रूप में जिस एकात्म भारत की परिकल्पना हमारे संविधान में की गई है उसकी भावना को हल्के में लिया जा रहा है। नीति आयोग का गठन 2014 के बाद योजना आयोग को भंग करके किया गया था। योजना आयोग के बारे में कहा जाता था कि इसमें लाल फीताशाही या अफसर शाही का जोर रहता था और राज्यों के मुख्यमन्त्री तक एक मन्त्रालय से दूसरे मन्त्रालय तक के चक्कर लगाने के मजबूर रहते थे। मुख्यमन्त्रियों को अपने राज्य की योजनाओं के लिए धन लेने के वास्ते दिल्ली के चक्कर पर चक्कर काटने पड़ते थे। प्रथम प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा स्थापित किये गये योजना आयोग का ढांचा बाद में 2004 तक पूरी तरह अफसरी अंदाज में चलने लगा था जबकि स्वयं प्रधानमन्त्री ही इसके अध्यक्ष हुआ करते थे। बेसक इसका उपाध्यक्ष कोई राजनीतिज्ञ ही होता था मगर सारा काम अफसरशाही के भरोसे ही रहता था। योजना आयोग विकास का जो नमूना तैयार करता था उसे हर राज्य पर उसकी विशिष्ट परिस्थितियां व भौगोलिक व सामाजिक संरचना जाने बिना ही एक समान रूप से लागू कर दिया जाता था। बल्कि हकीकत तो यह है कि नेहरू जी के जमाने में ही जब ओडिशा के मुख्यमन्त्री डा. हरेकृष्ण मेहताब थे तो उन्होंने योजना आयोग के काम करने के तरीके से बहुत ही हताशा प्रकट की थी। उन्होंने नेहरू जी को एक पत्र लिख कर कहा था कि 'विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की नकल पर भारत का विकास करने को आतुर योजना आयोग के अफसरों को इस देश की मूल विकास समस्याओं के बारे में कोई ज्ञान ही नहीं है। ऐसे अंग्रेजी दां लोग भारत के गांवों के बारे में कुछ नहीं जानते हैं'। इसके बावजूद योजना आयोग द्वारा बनाई गई पंचवर्षीय योजनाओं की मार्फत ही 1990 तक लगातार आर्थिक तरक्की करता रहा और यह एक औद्योगिक राष्ट्र बना तथा इसके समाज में बहुत बड़े मध्यवर्गीय उपभोक्ता श्रेणी का निर्माण हुआ। पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान की गई तरक्की के बूते पर ही भारत 1991 में अपनी अर्थव्यवस्था को विदेशी कम्पनियों के लिए खोलने की हिम्मत जुटा सका क्योंकि तब तक भारत का निजी उद्योग इस काबिल बन चुका था कि वह विदेशी प्रतियोगिता के सामने टिक सके। भारत की इस अपार क्षमता को देख कर ही विदेशी कम्पनियां 1991 के बाद से इस देश में निवेश करने को आतुर हुईं क्योंकि उन्हें भारत में पहले से ही तैयार एक बहुत बड़ा बाजार नजर आ रहा था। संरक्षित अर्थव्यवस्था के चलते यह बाजार उपभोक्ता सामग्री के विविधिकरण पर जोर नहीं दे पा रहा था अतः 1991 के बाद विदेशी निवेश खुल जाने व निजी उद्योग पर लगे विभिन्न नियन्त्रण समाप्त हो जाने पर भारतीय बाजार चहकने लगे और इनमें उत्पादों की किस्में अपना रंग दिखाने लगीं। साथ ही वित्तीय या बैंकिंग संशोधनों के बाद भारत के मध्य वर्गीय उपभोक्ताओं के लिए महंगे या विलासितापूर्ण समझे जाने वाले उत्पाद (जैसे मोटर, कार, स्कूटर, फ्रिज, ए.सी. आदि) जीवन जीने के जरूरी सामान बनते गये। इसके समानान्तर ही स्वास्थ्य व शिक्षा जैसे सामाजिक क्षेत्रों का भी वाणिज्यिकरण या बाजारीकरण होता चला गया और सार्वजनिक कम्पनियां भी निजी क्षेत्र के लिए खोली जाने लगीं जिसकी वजह से योजना आयोग की उपयोगिता धीरे–धीरे कम महसूस की जाने लगी। यहां तक कि पैट्रोल के दाम भी सीधे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार भावों से बांध दिये गये और ऐसा ही सोने के साथ ही किया गया। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव सोने के दामों व विदेशी मुद्रा डालर के भावों को लेकर किया गया। डालर के भावों को तय करना रिजर्व बैंक ने छोड़ दिया और मुद्रा बाजार इसके भाव रुपये के मुकाबले तय करने लगा। अतः 2004 तक आते–आते ही योजना आयोग की आवश्यकता नगण्य जैसी हो गई लेकिन केन्द्र में इस वर्ष कांग्रेस नीत मनमोहन सरकार आ जाने की वजह से योजना आयोग बदस्तूर काम करता रहा। इसकी असली वजह यह थी कि 1991 में वित्त मन्त्री की हैसियत से डा. मनमोहन सिंह ने ही खुली अर्थव्यवस्था लागू की थी। वह चाह कर भी पं. नेहरू द्वारा स्थापित योजना आयोग को भंग नहीं कर सकते थे। जबकि उनके शासनकाल में ही आयोग की पंचवर्षीय योजनाएं सीमित हो गई थीं। अतः 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमन्त्री बनते ही योजना आयोग को भंग करके नीति आयोग की स्थापना कर डाली। इसका उद्देश्य राज्यों की सलाह से उनके लिए विकास योजनाओं के लिए धन मुहैया करना था परन्तु इसमें भी बाद में दिक्कतें आने लगी थीं। जीएसटी लागू होने की वजह से राज्य केन्द्र से मिलने वाले अपने अंशदान पर निर्भर रहने लगे और गैर भाजपा राज्य शिकायत करने लगे कि जीएसटी में उनके हिस्से का धन मिलने में केन्द्र से बहुत देरी होती है। ये राज्य अपने साथ सौतेले व्यवहार की शिकायत करने लगे। वैसे मनमोहन सरकार में जब श्री मणिशंकर अय्यर पंचायत राज्य मन्त्री थे तो उन्होंने प्रस्ताव दिया था कि राज्यों की विकास योजनाएं पंचायत स्तर से गांव के विकास की तैयार होते हुए राज्य के सकल विकास तक जानी चाहिए और फिर योजना आयोग को मंजूरी देनी चाहिए लेकिन नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करना कोई हल नहीं समझा जा सकता। लोकतन्त्र में संवाद जहां रुकता है वहां कठिनाई और भी ज्यादा बढ़ जाती है। **–आदित्य नारायण**

सामर्थ्य का 'नया' प्रतीक

विनायक दामोदर वीर सावरकर की 140वीं जयंती पर भारत को नई संसद मिल गई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विधि विधान के साथ नए संसद भवन का उद्घाटन कर दिया। इसके साथ ही नई संसद को लेकर चल रही बहस भी बेमानी हो गई। भारत को नई संसद का मिलना भारतीयों के लिए गौरव का विषय है। भारत अब उन देशों में शामिल हो गया है जिसके पास आजादी के बाद स्वयं का बनाया हुआ संसद भवन होगा। पुरानी संसद 1927 में बनकर तैयार हुई थी। उसे बने 96 वर्ष हो चुके हैं। हर नवसृजन नई ऊर्जा और नई शक्ति का संचार करता है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के इस मंदिर से भारतीयों को गुलामी की प्रतीक पुरानी संसद से आत्मनिर्भर भारत की नई संसद में पहुंचने का अवसर मिला है। पुरानी संसद बनाने में भी पैसा और श्रम भारत का ही लगा था। नई संसद अब राष्ट्र की अस्मिता का प्रतीक बन गई है। नई संसद इस बात की प्रतीक बन गई है कि देश का लोकतंत्र कितना ताकतवर है। नई इमारत को भारत की पहचान के तौर पर देखा जाएगा। नई इमारत से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक भारत की छवि और चमकेगी। पूर्व में इस बात पर बड़ी बहस होती रही है कि देश को नई संसद की जरूरत है या नहीं। नई संसद बनाने के पक्ष में और विपक्ष में तर्क दिए जाते रहे हैं और सैंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट को लेकर मामला सुप्रीम कोर्ट तक भी पहुंचा लेकिन तमाम बाधाओं के खत्म होने के बाद आज नई इमारत हमारे सामने है। नया संसद भवन बनाने की जरूरत इसलिए पड़ रही थी कि संसद भवन अत्यधिक बोझ के नीचे काम कर रहा था। जरा सोचिये जिस इमारत को बने लगभग 100 साल होने को हों उसकी हालत जर्जर तो होगी ही। बैठने की व्यवस्था काफी तंग हो चुकी थी। न ही यह धबिल्डिंग भूकम्प विरोधी थी और न ही इसे अग्नि मानदंडों के अनुरूप माना जा सकता था। केंद्र सरकार के अनुसार इसका रिनोवेशन कराना, नए और आधुनिक संचार उपकरणों को इंस्टाल करना इस बिल्डिंग में मुश्किल हो गया था। इसके अलावा सबसे बड़ी बात यह है कि देश की आबादी को देखते हुए संभवतः सांसदों की संख्या भी बढ़ेगी। ऐसे में पुराने संसद भवन में सभी सांसदों को अकोमोडेट करना मुश्किल हो गया था। इसलिए केंद्र की मोदी सरकार ने फैसला किया कि पुराने संसद भवन के पास ही नए संसद भवन का निर्माण किया जाए। फिर सेंट्रल विस्टा रि–डेवलपमेंट प्रोजेक्ट तैयार किया गया, जिसके तहत नए संसद भवन का निर्माण हुआ है। नया संसद भवन कुल 64,500 वर्गमीटर में फैला हुआ है और इसके निर्माण पर करीब 1200 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। नए संसद भवन में लोकसभा में 888 सांसदों के बैठने की जगह है जबकि राज्यसभा में 384 सांसदों के बैठने की जगह तैयार की गई है। वहीं दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन के दौरान 1280 सांसद एक साथ बैठ सकते हैं। मौजूदा समय की जरूरतों के हिसाब से नए संसद भवन में सारी तैयारियां की गई हैं।

नए संसद भवन में कामकाज के लिए अलग ऑफिस बनाए गए हैं जो हाइटैक सुविधाओं से लैस हैं। कैफे, डाइनिंग एरिया, कमेटी मीटिंग के सभी कमरों में भी हाइटैक उपकरण लगाए गए हैं। नई संसद की सबसे बड़ी विशेषता संविधान हाल है जो भवन के बीचोंबीच बना हुआ है। इसी के ऊपर अशोक स्तम्भ लगा हुआ है। इस हाल में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और देश के सभी प्रधानमंत्रियों की तस्वीरें लगाई गई हैं। अब संसद का आगामी सत्र इसी नई इमारत में होगा। यहीं से कानून बनेंगे और यहीं से देश चलेगा। नई संसद तैयार करने के पीछे यह तर्क भी था कि वक्त अब काफी बदल चुका है और गुलामी के प्रतीकों को बदलने का दौर भी आ चुका है। देश की अपनी स्वतंत्र छाप और लोकतंत्र की नई कहानी कहने के लिए नया संसद भवन अगली शताब्दियों के लिए एक नया रूप गढ़ने को तैयार है। जनता के लिए नए फैसले अब इसी भवन से निकलकर आएंगे। लोकतंत्र का प्रतीक नया संसद भवन केवल सत्ताधारी दल या विपक्षी दलों का नहीं है। यह देश की धरोहर है और यह हर भारतीय का है। बेहतर होता यदि इसके उद्घाटन को लेकर सियासत नहीं होती। तब पूरे विश्व में एकजुटता का संदेश जाता। भारत के लोगों के लिए देश को नई संसद का मिलना एक भावनात्मक मुद्दा है। उनका स्वाभिमान बढ़ा है और भारतीय अपने स्वाभिमान के लिए जाने जाते हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। अन्य सभी मुद्दे उनके घलिए इस अवसर पर गौण हैं।

मोदी सरकार के नौ साल के जश्न की तैयारी

केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने जा रहे हैं। 30 मई को सरकार के नौ साल पूरे होंगे और इस मौके पर एक महीने के जश्न की शुरुआत होगी। अगले एक महीने भाजपा पूरे देश में मोदी सरकार के कामकाज का प्रचार करेगी। केंद्र सरकार की उपलब्धियों के बारे में अलग अलग राज्यों में जाकर पार्टी के नेता बताएंगे। मंत्रालयों के हिसाब से केंद्र सरकार की उपलब्धियों की सूची बनाई जा रही है। सरकारी पोर्टल माई गॉव के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आकाश त्रिपाठी ने सभी मंत्रालयों को चिटठी लिख कर उनसे उनकी योजनाओं के बारे में जानकारी मांगी है। उन योजनाओं पर अमल से क्या बदलाव हुआ है और लोगों को क्या फायदे हुए हैं इसकी सूची भी बनाई जा रही है। केंद्र सरकार की ओर से प्रचार की अलग रणनीति बनी है तो भाजपा की ओर प्रचार की अलग रणनीति बनाई जा रही है। पार्टी पूरे देश में कार्यक्रमों का आयोजन करेगी। इसकी शुरुआत 31 मई को राजस्थान के अजमेर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली से हो रही है। इस रैली में आसपास के कई राज्यों के लोग शामिल होंगे। गौरतलब है कि राजस्थान में इसी साल विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। राजस्थान के अलावा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी चुनाव हैं और बताया जा रहा है कि उन राज्यों में भी प्रधानमंत्री मोदी की रैलियां हो सकती हैं। इसके अलावा पार्टी के नेता पूरे देश में 50 से ज्यादा रैलियां करेंगे। भाजपा ने जिला स्तर से लेकर बूथ स्तर तक कार्यक्रम करने का प्लान बनाया है। 30 मई से भाजपा का संपर्क अभियान शुरू होगा, जो 30 जून तक चलेगा।

आज का राशिफल

मेष :– कुछ अच्छे आसारों से मन प्रफुल्लित रहेगा। पेशे संबंधी कोई यात्रा में अवरोध संभव। शिक्षार्थियों के लिए विशेष लाभ के आसार बनेंगे। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्कता अपेक्षित है।

बृषभ :– स्वयं पर भरोसा रख योजनाओं को सुचारू रुप से क्रियान्वित करें। सगे–संबंधों में सरल व व्यावहारिक बनने की कोशिश करें। अर्थाभाववश चिंता संभव।

मिथुन :– किसी महत्वपूर्ण कार्य में अवरोध से मन हतोत्साहित होगा। संबंधों के प्रति कुछ नयी शिकायतें संभव। किसी विद्वान के विचारों से प्रभावित मन में उत्साह का संचार होगा।

कर्क :– कोई नई जिज्ञासा मन को आकर्षित करेगी। भौतिक सुख–साधनों की लालसा बढ़ेगी। शिक्षा–प्रतियोगिता की दिशा में किया गया परिश्रम तीव्र होगा। रोजगार में प्रगति संभव।

सिंह :– किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। मित्रवत संबंधों का लाभ प्राप्त होगा। आवेश में लिये गये निर्णय से पश्चाताप संभव। रोजगार में अति व्यस्तता रहेगी किंतु कायरे को समय से पूर्ण करें।

कन्या :– समस्याओं के समाधान हेतु मन नयी–नयी युक्तियों पर केंद्रित होगा। महत्वपूर्ण कायरें के प्रति आलस्य न करें। छोटी–छोटी बातों पर क्रोधित न हो। जीवन साथी से मधुरता कायम रखें।

तुला :– मन सकारात्मक विचारों से प्रभावित होगा। नाजुक संबंधों में संतुलित वाणी का प्रयोग करें। कोई हितैषी बिगड़े हुए संबंधों को सुधरवायेगा। रोजगार में अपनी क्षमता का लाभ उठाएंगे।

वृश्चिक :– सभी प्रकार के दायित्वों की पूर्ति हेतु संतुलित योजना पर चलें। किसी महत्वपूर्ण निर्णय में सगे–संबंधियों का सहयोग प्राप्त होगा। विरोधियों की प्रबलता से कार्यक्षेत्र में कुछ कठिनाइयां संभव।

धनु :– नये समीकरण लाभकारी कार्य क्षमता के परिचायक होंगे। प्रणय संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। आय–व्यय में संतुलन बनाने का प्रयत्न करें। महत्वपूर्ण कायरे में आलस्य का त्याग करें।

मकर :– कोई नई जिज्ञासा मन को आकर्षित करेगी। भौतिक सुख–साधनों की लालसा बढ़ेगी। शिक्षा–प्रतियोगिता की दिशा में किया गया परिश्रम सार्थक होगा। रोजगार में प्रगति संभव।

कुंभ :– पुरानी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर उत्साहित होंगे। नियोजित कार्यकुशलता से प्रगति के लिए आशान्वित होंगे। सुखद कायरें की व्यस्तता रहेगी। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्क रहें।

मीन :– क्षमता से परे किसी कार्य की जिम्मेदारी लेना हानिकार हो सकती है। विद्यार्थी शिक्षा में लापरवाही न करें। रोजगार में लाभ के नये अवसर प्राप्त होंगे। परिवार में मेहमान के आगमन से व्यय संभव।

चार कंधों पर लोकतंत्र

सेंट्रल विस्टा यानी संसद के नए भवन का उद्घाटन संपन्न हो गया। भारतीय लोकतंत्र के काले दिनों के इतिहास में एक और दिन जुड़ गया, जो शायद आखिरी हो, क्योंकि अब लोकतंत्र की किताब खुल पाएगी या नहीं, कहा नहीं जा सकता। लोकतंत्र के तीन स्तंभों, कार्यपालिका. विधायिका और न्यायपालिका के साथ मीडिया ने भी अपनी उपस्थिति स्तंभों में शुमार करवा दी, तो अब लोकतंत्र के चार स्तंभ कहे जाते हैं। संयोग देखिए अर्थी उठाने के लिए भी चार कंधों की ही जरूरत होती है। भारत के लोकतंत्र के लिए चार कंधे जुट गए हैं। आखिरी प्रार्थना के तौर पर किसे क्या उच्चारित करना है, अब तक इसकी इजाजत संविधान से मिली हुई है। लेकिन इस इजाजत की उम्र भी कितनी है, कौन जानता है।

संविधान भी कब तक कारगर रहेगा, कोई नहीं जानता। लोकतंत्र, संघर्षों से मिली आजादी, भारत की गौरवमयी स्वतंत्रता आंदोलन की गाथा, वीर स्वाधीनता सेनानी, सभी वर्गों के प्रतिनिधित्व से बनी संविधान सभा, डा.अंबेडकर और संविधान सभा के विद्वतजनों के अथक परिश्रम, गहन विचार–विमर्श के बाद बने संविधान, देश में सभी धर्मों के लोगों का मिलजुलकर रहना और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत पर चलना, ऐसी तमाम बातों पर गौरव का अनुभव करने वालों ने क्या कभी इस बात की कल्पना की होगी कि कोई ऐसा दिन भी आएगा, जब संसद से विपक्ष नदारद रहेगा और हिंदू धर्म के पुजारियों की भीड़ के बीच नए भवन का उद्घाटन किया जाएगा। संविधान में सबको बराबरी का दर्जा मिलने के बावजूद देश के कई मंदिरों में विधर्मियों, दलितों, स्त्रियों का प्रवेश वर्जित है। बाहर साफ–साफ तख्तियों पर इसके निर्देश लिखे रहते हैं। लोग इस पर बुरा मान कर भी कुछ नहीं कर पाते कि इंसान–इंसान के बीच ये किस तरह का भेदभाव है। क्योंकि जहां धर्म की सत्ता चलती है, वहां तर्क खोखले हो जाते हैं। नए संसद भवन में ऐसी कोई तख्ती तो घोषित तौर पर नहीं लगी है, लेकिन जिस तरह से इसका उद्घाटन कार्यक्रम संपन्न हुआ, उसके बाद तख्ती लगाने की कोई जरूरत ही नहीं है। 56 इंची सरकार ऐसे ही नहीं कहलाती, जो ठान लेती है, जो मान लेती है, उसे ताल ठोंककर पूरा करके दिखाती है। विपक्ष को विरोध करना है, करता रहे, प्रधानमंत्री को संसद का उद्घाटन करना था, सो उन्होंने कर लिया। इससे पहले 26 मई को श्री मोदी ने संसद के नए भवन का एक वीडियो शेयर करते हुए लिखा था कि इस वीडियो को अपने खुद के वॉयस–ओवर के साथ शेयर करें, जो आपके विचार व्यक्त करता है। मैं उनमें से कुछ को री–ट्वीट करूंगा। जनता अब तो समझ जाए कि लोकतंत्र का स्तर कितना नीचे गिरा दिया गया है, जहां विचार आपके होंगे, लेकिन वे तभी सुनाए जाएंगे, जब सत्ता की मंजूरी उसे मिल जाए। लोकतंत्र के साथ वॉयस ओवर का यह नया खिलवाड़ किस तरह का प्रयोग है, इसकी परतें शायद आने वाले वक्त में खुलें। वैसे इस खेल के जरिए सरकार ने अपनी मंशा साफ कर दी है। संसद यानी पुराने भवन में आजादी के बाद संविधान सभा की बैठकें होती थीं, एक–एक बिंदु पर विचार करके, तीखी बहसों के साथ आगे बढ़ा जाता था और नियम लिखे जाते थे, तो उसके पीछे नीयत यह थी कि आजादी सही मायने में देश के हरेक नागरिक को हासिल हो, महसूस हो। सवर्ण, संपन्न तबका तो गुलामी के दौर में भी ठाठ से ही रहता था, इसमें कुछ लोग थे, जो आजादी के लिए कुर्बानियां देते थें, कष्ट सहते थे। मगर गरीब, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक तबके के लिए तो जिंदगी जैसी गुलामी के दौर में थी, आजादी के बाद भी वैसी ही रहती। पाकिस्तान तो धर्म के आधार पर अलग हो गया था और बहुत से लोग सीमा के उस पार चले गए थे। मगर उस वक्त भी बहुत से मुसलमानों ने अपने वतन यानी हिंदुस्तान को छोड़ना स्वीकार नहीं किया। ऐसे तमाम लोगों के लिए बराबरी के, सम्मान के साथ जीने के अवसर बने रहें, इसकी व्यवस्था संविधान में की गई। इन अधिकारों के कारण ही भारत का लोकतंत्र मजबूत हुआ। पुराने संसद भवन की दीवारें लोकतंत्र के सशक्त होने की गवाह रही हैं। आजादी के बाद की सभी सरकारों ने कई तरह की गलतियां की, कई तरह के आघात झेले, कई बार नैतिकताओं, मर्यादाओं को ताक पर रखा गया. मगर सारे झंझावात के बीच लोकतंत्र के पेड़ की जड़ें जगह पर टिकी रहें, यह सुनिश्चित किया गया। भाजपा के ही पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि सरकारें आएंगी, जाएंगी, मगर ये देश बना रहना चाहिए। वे अच्छे से जानते थे कि देश लोकतंत्र के बिना बना नहीं रहेगा। इसलिए चाहे जमीन समतल करने की बात उन्होंने कही हो, लोकतंत्र की जड़ों को उखाड़ने की मंशा उन्होंने भी कभी नहीं दिखाई। पुरानी संसद में जनता की आवाज गूंजती थी, नई संसद में चुनिंदा वॉयस ओवर चलाए जाएंगे। लोकतंत्र की जड़ें उखड़नी शुरु हो गई हैं, इसका उदाहरण 28 मई को ही देखने मिल गया, जब जंतर–मंतर से 35 दिनों से धरने पर बैठे पहलवानों के तंबू उखाड़े जाने लगे। पहलवानों की मांग इतनी ही है कि जिस भाजपा सांसद और कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर यौन शोषण का आरोप लगा है, उस पर कार्रवाई की जाए। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर देश को जीत का गौरव दिलाने वाले पहलवान न्याय के लिए रोज जूझ रहे हैं। उनका साथ देने किसान सामने आए हैं, महिलाएं सामने आई हैं। लोकतंत्र में विरोध–प्रदर्शन इसी तरह होता है। मगर अब किसानों का रास्ता रोका जा रहा है, पहलवानों को हिरासत में लिया जा रहा है। ये दिल्ली की तस्वीरें हैं, जो सामने आ गई हैं। उधर पूर्वोत्तर में मणिपुर की तस्वीरें तो गायब ही हैं कि वहां रोजाना कितने लोग अपने घर को छोड़ने पर मजबूर हो रहे हैं। असंतोष, विद्रोह, नाराजगी की चिंगारियां कई जगहों पर धीमी–धीमी सुलग रही हैं, मगर सरकार सेंट्रल विस्टा की आरामगाह में पहुंच चुकी है। जहां राजतंत्र की रक्षा के लिए राजदंड भी स्थापित कर दिया गया है। पंचतंत्र की एक कहानी में लिखा है कि आग और पानी का साथ संभव ही नहीं है, पानी अगर आग जितना गरम कर दिया जाए, तब भी आग को वो बुझा ही देगा। कुछ यही संबंध राजतंत्र और लोकतंत्र में है। राजा कितना भी लोकप्रेमी दिखने की कोशिश करे, उसका राजदंड लोक पर ही प्रहार करेगा। हिंदुस्तान को इस प्रहार के लिए अब तैयार रहना चाहिए।

मायावती के सांसदों की चिंता

बहुजन समाज पार्टी के सांसद चिंता में हैं। जैसे जैसे लोकसभा चुनाव नजदीक आ रहा है वैसे वैसे उनकी चिंता बढ़ रही है। मायावती इस जिद पर अड़ी हैं कि वे अकेले चुनाव लड़ेंगी। उनके अकेले चुनाव लडने पर क्या होगा, इसका अंदाजा उनके सभी सांसदों को है। उन्होंने 2014 का लोकसभा चुनाव अकेले लड़ा था और उनकी पार्टी का एक भी सांसद नहीं जीता था, जबकि वोट 20 फीसदी के करीब मिले थे। अगले चुनाव में यानी 2019 में उन्होंने समाजवादी पार्टी से तालमेल किया तो उनके 10 सांसद जीत गए। समाजवादी पार्टी पांच की पांच सीटों पर रह गई, लेकिन मायावती के सांसदों की संख्या जीरो से 20 हो गई। सोचें, 2014 में मायावती को उत्तर प्रदेश की सत्ता से बाहर हुए सिर्फ दो साल हुए थे और उनका वोट पूरी तरह से उनके साथ था तब त्रिकोणात्मक मुकाबले में उनको एक भी सीट नहीं मिली थी। उनको राज्य की सत्ता से बाहर हुए 11 साल हो गए हैं और उनका वोट धीरे धीरे उनका साथ छोड़ता गया है, जो पिछले विधानसभा चुनाव में दिखा। पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव में उनको सिर्फ 12.88 फीसदी वोट मिला और पार्टी सिर्फ एक सीट जीत पाई। ऐसे समय में अगर वे लोकसभा का चुनाव अकेले लडने जाती हैं तो सबको पता है कि नतीजे 2014 से भी खराब होंगे। सीटें तो नहीं मिलेंगी वोट भी 10 फीसदी से नीचे जा सकता है। तभी उनकी पार्टी के सांसद बेचौन हैं। वे चाहते हैं कि मायावती विपक्षी पार्टियों के गठबंधन का हिस्सा बन कर चुनाव लड़ें। अगर वे ऐसा नहीं करती हैं तो ज्यादातर सांसद पाला बदलने को तैयार बैठे हैं।

अमरोहा से पार्टी के सांसद कुंवर दानिश अली ने मायावती से गठबंधन में शामिल होने की अपील की है। उनको पता है कि पिछली बार समाजवादी से तालमेल होने की वजह से ही वे जीते थे और अगर मायावती अकेले लड़ीं तो वे नहीं जीत सकते हैं। उनसे पहले बसपा के एक सांसद रितेश पांडेय ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से मुलाकात की थी। उनके सपा में जाने की चर्चा है। यह बसपा के सिर्फ दो सांसदों की कहानी नहीं है। पिछली बार बसपा की टिकट से लोकसभा का चुनाव लड़े पूर्व सांसद कुशल तिवारी पार्टी छोड़ कर सपा में जा चुके हैं। अभी कई सांसद, कई पूर्व सांसद और बसपा की टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़ चुके कई नेता दूसरी पार्टियों में जाने की तैयारी में हैं। बताया जा रहा है मायावती की पार्टी के कम से कम आठ सांसद ऐसे हैं, जो तालमेल नहीं होने की स्थिति में दूसरी पार्टी से चुनाव लडने जा सकते हैं। ऐसे कई सांसद भाजपा और समाजवादी पार्टी के संपर्क में हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में मायावती लगभग निष्क्रिय रहीं, जिसका नतीजा यह हुआ कि उनके वोट का एक बड़ा हिस्सा भाजपा की ओर शिफ्ट हुआ। कहा जा रहा है कि वे किसी तरह के दबाव में हैं, जिसकी वजह से भाजपा को मजबूत चुनौती देने की रणनीति में विपक्ष के साथ शामिल नहीं हो रही हैं। उन्हें किसी बाहरी दबाव में निष्क्रिय रहना है या और अपनी पार्टी का अस्तित्व बचाने के लिए कदम उठाना है, इसका फैसला उनको करना है।

उद्योग बन्धु की बैठक में मण्डलायुक्त गौरव दयाल

औद्योगिक क्षेत्र की भूमि से सम्बंधित विवादों को अलग से करें निस्तारण : गौरव दयाल

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अयोध्या। मण्डलायुक्त गौरव दयाल की अध्यक्षता में औद्योगिक निवेश एवं रोजगार प्रोत्साहन नीति व उत्तर प्रदेश सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन नीति के क्रियान्वयन हेतु देय सुविधाओं की पात्रता हेतु लेटर आफ कम्फर्ट जारी करने हेतु गठित स्वीकृति समिति व मण्डलीय उद्योग बन्धु की बैठक आयुक्त सभागार में आहुत की गयी। मण्डलायुक्त ने गत बैठक में लिये गये निर्णयों के अनुपालन की एक–एक बिन्दु के प्रगति की बिन्दुवार समीक्षा की। उन्होंने पूर्व बैठक के एजेंडे की कृत कार्यवाही की जानकारी सम्बंधित अधिकारियों से ली, जिसमें अधिकारियों द्वारा बताया गया कि मण्डलीय उद्योग बन्धु फोरम में प्राप्त सुषमा तिवारी ग्राम व पोस्ट खण्डासा अयोध्या तथा सुरेन्द्र प्रताप सिंह आई0आई0ए0 अध्यक्ष द्वारा पूर्व बैठक में उठाये गये मुद्दों का निस्तारण किया जा चुका है। उन्होंने उपस्थित सभी उद्यमियों से एक–एक कर उनकी समस्याओं का जाना तथा सम्बंधित अधिकारियों को उद्यमियों की समस्याओं का निस्तारण करने के निर्देश दिये। मण्डलायुक्त ने कहा कि औद्योगिक

क्षेत्र की भूमि से सम्बंधित विवादग्रस्त समस्याओं के लिए सम्बंधित तहसीलों के उपजिलाधिकारी एवं एडीएम के साथ एक अलग बैठक आहूत की जाय, जिससे लम्बित भूमि प्रकरण से सम्बंधित समस्याओं का निस्तारण हो सकें। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, मुख्यमंत्री युवा–स्वारोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद योजना, निवेश मित्रा, की प्रगति की समीक्षा की गयी। बैठक में उपस्थित पुलिस महानिरीक्षक प्रवीण कुमार ने सभी उद्यमियों से कहा कि पुलिस विभाग से सम्बंधित यदि कोई समस्या हो तो वह मुझे अवगत करा सकते है। उन्होंने सभी उद्यमियों से कहा कि औद्योगिक क्षेत्र में अपनी इकाईयों के बाहर सीसीटीवी कैमरे लगायें, जिससे सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होगी। उक्त बैठक में समिति द्वारा एलओसी निर्गत किये जानेध्प्रथम चरण हेतु मे0 यश पैका लि0 यश नगर अयोध्या को स्वीकृति प्रदान की गयी तथा द्वितीय चरण हेतु एलओसी प्राप्त 06 इकाईयों के आवेदन पत्र के स्वीकृति पर चर्चा की गयी। समिति की बैठक में पूर्व में मे0 गणपति एग्री बिजनेश प्रा0लि0 बाराबंकी को जारी लेटर आफ कम्फर्ट को निरस्त किये जाने की स्वीकृति प्रदान की गयी। बैठक का संचालन संयुक्त आयुक्त उद्योग एच0पी0 सिंह द्वारा किया गया। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0ध्रा0) अयोध्या महेन्द्र कुमार सिंह, उपजिलाधिकारी सदर ध्ज्वॉइंट मजिस्ट्रेट विशाल कुमार, ज्वाइंट कमिश्नर वाणिज्यकर, उपश्रमायुक्त, एलडीएम बाराबंकी आदि सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों व अन्य उद्यमीगण उपस्थित थे। अन्त में मण्डलायुक्त गौरव दयाल की अध्यक्षता में उ0प्र0 मण्डलीय माइक्रो एण्ड स्माल इण्टरप्राइजेज, फैसिलिटेशन काउंसिल की बैठक हुई।

बैठक में सुलह समझौते के आधार पर 06 वादों के सम्बंध में चर्चा की गयी तथा 2 वादों में आर्बीट्रेशन सम्बंधी बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गयी जिसमें मे0 सुन्दर सिक्योरिटी सर्विसेज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश बनाम मे0 लानार्सी इन्फ्रा लि0 तेलंगाना तथा मे0 प्रताप कांक्रीट अम्बेडकरनगर बनाम मे0 आई0एल0एण्ड एफ0एस0 के प्रकरण पर चर्चा की गयी। इस अवसर पर मण्डलीय माइक्रो एण्ड स्माल इंटरप्राइजेज, फैसिलिटेशन काउंसिल अयोध्या के सभी सदस्यगण सहित वादी प्रतिवादी उपस्थित रहे।

शादी का झांसा देकर महिला ने युवक पर दुष्कर्म का लगाया आरोप

कानपुर। कानपुर में चकेरी में शादी का झांसा देकर एक युवक ने महिला से दुष्कर्म किया। आरोपी के पिता ने भी मौका देखकर अश्लीलता और छेड़खानी की। महिला ने इसका विरोध किया और युवक पर शादी का दबाव बनाया तो मारपीट शुरू कर दी। महिला ने चकेरी थाने में आरोपी युवक और उसके पिता के खिलाफ चकेरी थाने में रेप, छेड़खानी समेत अन्य गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कराई है। चकेरी पुलिस आरोपी की अरेस्टिंग के लिए दबिश दे रही है। चकेरी निवासी महिला के मुताबिक पति से कलह के चलते वह अपनी छह साल की बेटी के साथ अलग रहती थी। इस दौरान इलाके का युवक आदित्य वर्मा संपर्क में आया और मदद का झांसा देकर घर आने–जाने लगा। इसके बाद आदित्य ने उन्हें सस्ते में किराए में मकान दिलवाने के झांसा दिया। फिर 22 अप्रैल को आरोपित ने उन्हें अपने मकान की दूसरी मंजिल में रहने को कमरा दे दिया। युवक के पिता पर भी छेड़खानी का आरोप पीड़िता के अनुसार एक दिन आरोपित ने उन्हें कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाया और दुष्कर्म किया।

सड़क निर्माण के बाद खुदाई कटिंग हुई तो लगेगा जुर्माना :मंडलायुक्त

मंडलायुक्त ने लाटूश रोड,शिवाजी मार्ग,शहनजफ रोड का लिया जायजा

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। राजधानी में चल रहे निर्माण कार्यो को गति प्रदान करने के लिए सोमवार को मंडायुक्त डॉ. रोशन जैकब ने विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया। जिसमें सबसे पहले मंडलायुक्त ने लाटूश रोड, शिवाजी मार्ग, शाहनजफ रोड पर ड्रेनेज, डक्ट, सड़कों के मरम्मत के कार्य व बिजली के पोल को सड़को से हटाने कार्यो का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने उपस्थित संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि सड़कों के शेष बचे निर्माण कार्य को वर्षा से पूर्व कंप्लीट करा लिया जाए। जिन दुकानों के बेसमेंट में पानी का रिसाव होकर बेसमेंट में एकत्रित हो रहा है उक्त समस्या के समाधान के लिए जल निगम, लोक निर्माण विभाग, नगर निगम संयुक्त रूप से सर्वे कराते हुए तत्काल समस्या से निजात दिलाऐ। उन्होंने कहा कि आगामी सोमवार को पुनरू समस्त सड़कों का निरीक्षण किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि लाटूश रोड, शिवाजी मार्ग पर दुकानों के सामने कूड़ेदान ना होने पर मंडलायुक्त ने

नगर निगम के अधिकारीयो को कूड़े दान लगाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि दुकानों के सामने कूड़ेदान लगे होने के बावजूद अगर इधर–उधर कूड़ा फेंका जाता है तो संबंधित दुकानदार के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिये। मंडलायुक्त ने लाटूश रोड पर समस्त बिजली के पोलो को अभी तक शिफ्ट ना किए जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियो को निर्देश दिये कि तत्काल शेष विद्युत के पोलो को शिफ्ट करा दिया जाये। संबंधित अधिकारी द्वारा बताया गया कि लाटूश रोड पर 40 पोलो में से 30 पोलो को हटा दिया गया है। इसके साथ ही शिवाजी मार्ग पर 35 पोलो में से 26 पोलो को हटा दिया गया है शेष पोलो को 3 दिन के अंदर शिफ्ट कर दिया जाएगा। निरीक्षण के दौरान मंडलायुक्त ने कहा कि यूटिलिटी के नाम पर जो भी कार्य किये जाने है वह सड़क निर्माण से पूर्व उसको तत्काल कराले अन्यथा सड़क निर्माण के बाद अगर सड़क की खुदाई,कटिंग की जाती है तो संबंधित विभाग पर जुमार्ना लगाया जायेगा। शाहजनफ रोड के निरीक्षण के दौरान मंडलायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि चेंबर के निमार्णाधीन कार्य में तेजी लाएं।

संक्षिप्त खबरे

बंधक बनाकर दुष्कर्म करने वाले को पुलिस ने दबोचा,भेजा जेल

शाहाबाद,हरदोई। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में घर में सो रही एक 14 वर्षीय किशोरी को पड़ोस के एक युवक जबरदस्ती अगवा कर ले गया। तथा अपने घर में बंधक बनाकर उसके साथ रेप किया। घटना के सम्बंध में किशोरी के पिता की तहरीर पर गांव के ही 3 युवकों पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। सोमवार को कोतवाली पुलिस ने आरोपी युवक चांद मियां को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार 27 मई कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में रात को आरोपी युवक ने अपने 2 अन्य साथियों के साथ मिलकर पड़ोसी घर में सो रही 14 वर्षीय किशोरी को उसके घर से जबरदस्ती उठा लिया और अपने घर में बंद कर उसके साथ जबरदस्ती दुष्कर्म किया। तथा बाद में किशोरी को रविवार की सुबह 4रू00 बजे उसके दरवाजे पर छोड़कर फरार हो गये। किशोरी का पिता अपनी पुत्री को रात भर ढूंढता रहा। सुबह उसकी पुत्री घर के बाहर बेसुध पड़ी मिली। कोतवाली आकर घटना में शामिल सभी तीनों लोगों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई। सोमवार को पुलिस ने आरोपी चांद मियाँ को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

टीन शेड और बांस से बने झोपड़े में लगी आग

बिलग्राम, हरदोई । नगर के मोहल्ला रफय्यतगंज में टीनशेड और बांस से बनी झोपड़ी में आग लग जाने से उसमें रखा सामान जलकर राख हो गया, सूचना पर पहुंची दमकल ने आग पर काबू पाया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, नगर क्षेत्र के मोहल्ला रफय्यतगंज में अंकित सोनी का मोहल्ले के पड़ोस में एक ठाठ का झोपड़ा पड़ा है उसी में गेहूं का भूसा व खाने का गल्ला भरा हुआ था। सोमवार तड़के सुबह अज्ञात कारणों के चलते उसमें आग लग गयी, जिससे उसमें रखा सारा सामान जलकर राख हो गया। अंकित के मुताबिक, झोपड़ी में 45 बीघे का भूसा भरा था साथ ही उसमें पांच कुंतल रखा गेहूं चार बोरी, खाद जल गयी। मोहल्ले वासियों ने आग बुझाने का प्रयास किया किंतु सफल न हो सके, आखिर में फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई मौके पहुंची दमकल ने आग पर काबू पाया।

बारात विदा कर वापस लौट रहे दुल्हे पर हमला

ऊंचाहार,रायबरेली। रविवार की रात रोहनिया गांव में राकेश लोधी की बेटी मोहनी का विवाह था फतेहपुर जिले के अजुआ गांव थाना क्षेत्र सैनी से बारात आई रात भर मंगल गीतों के साथ विवाह का कार्यक्रम संपन्न हुआ । सोमवार की दोपहर दूल्हा दीपू सिंह दुल्हन को विदा करके अपने गांव के लिए निकले थे । आरोप है कि तभी गांव के समीप बिजली घर के पास 10 से 12 अज्ञात लोग आकर दूल्हे की गाड़ी को रुकवा कर दूल्हे को पीटने लगते है आसपास के लोगों ने जब देखा और पकड़ने का प्रयास किया तो आरोपित पहले पैदल फिर मोटरसाइकिल से भाग गए । साथ के बारातियों व स्थानीय लोगों ने घायल दूल्हा दीपू सिंह को सीएचसी रोहनिया में ईलाज के लिए ले गए ।सीएचसी अधीक्षक डॉ एमके शर्मा ने बताया कि घायल अवस्था मे एक व्यक्ति को अस्पताल लाया गया जिसका इलाज कर दिया गया है ।सलोन कोतवाल नारायण कुशवाहा ने बताया कि ऐसे किसी मामले की सूचना नहीं है तहरीर मिलने पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी ।

रंजिसन कुल्हाड़ी से वार कर किया गंभीर रूप से घायल

लालगंज,रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के पूरे कछुवाहन मजरे लोदीपुर उतरावां गांव में रंजिसन मारपीट की घटना हुई है। घटना में गंभीर रूप से घायल मनदीप सिंह पुत्र शीतला बक्स सिंह ने गांव के ही शिव भान सिंह और अजय कुमार सिंह के खिलाफ मामला दर्ज कराया है ।मनदीप सिंह ने लालगंज पुलिस को शिकायती पत्र देते हुए बताया कि विपक्षी गण उनके परिवार से रंजिश रखते हैं जिसके चलते रविवार रात 9 बजे लाठी व कुल्हाड़ी से उनके ऊपर हमला कर दिया। चीखने चिल्लाने पर बचाने दौड़ी मां प्रभा सिंह को भी मारा पीटा। लालगंज पुलिस ने मनदीप सिंह की शिकायत पर दोनों घायलों का मेडिकल कराते हुए आरोपी गणों के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत किया है।

पुलिस ने टप्पेबाजों की तलाश में सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले

कानपुर। शहर के गोविंद नगर में पुलिसकर्मी बनकर तीन टप्पेबाजों ने चेकिंग के नाम पर दबौली निवासी सर्राफ प्रदीप वर्मा से पांच लाख के गहनों की टप्पेबाजी कर दी। टप्पेबाजी का एहसास होने पर पीड़ित ने गोविंद नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने टप्पेबाजों की तलाश में सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले हैं। प्रदीप वर्मा ने पुलिस को बताया कि बीते 26 मई को काम से जा रहे थे। जैना पैलेस के पास उन्होंने स्कूटी में पेट्रोल डलवाया। कुछ दूर जाने पर स्कूटी पंक्चर होने पर वह स्कूटी पैदल लेकर जा रहे थे तभी बाइक सवार दो युवकों ने उन्हें आवाज देकर रोका। खुद को पुलिसकर्मी बताकर चेकिंग कराने को कहा। वजह पूछी तो एक शख्स ने नारकोटिक्स डिपार्टमेंट में तैनात होने की बात कहते हुए उनसे ड्रग्स सप्लाई करने की बात कही।

वर्दी में न होने की बात पूछी तो उसने पुलिस के आई कार्ड दिखाए। चेकिंग के दौरान कहा कि शहर में लूट की वारदातें होने के बावजूद लोग चेन, अंगूठी पहनकर चलते हैं। जब घटना होती है तो पुलिस को जिम्मेदार बताते हैं। उनसे चेन, चार अंगूठी उतार कर कागज में लपेटकर स्कूटी की डिग्गी में रखने को कहा। जब उन्होंने घर जाकर कागज खोला तो अंदर नकली गहने थे। थाना प्रभारी धनंजय पांडेय ने बताया घटनास्थल पर लगे सीसीटीवी फुटेज में टप्पेबाज नजर आए हैं। उनकी तलाश की जा रही है।

निर्धारित समय से पहले ओपीडी बंद करने वालो पर होगी कार्रवाई :ब्रजेश पाठक

डिप्टी सीएम ने लिया संज्ञान,पांच को नोटिस, दो दिन में जांच रिपोर्ट देने के आदेश

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों की लापरवाही के मामले जो थमने का नाम ले रहे हैं ओपीडी के लिए निर्धारित समय पूर्व डॉक्टर नदारद होने क मामला आया है। जिसे डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने सक्त रूख अपनाते हुए सोमवार को सीएमओ को दो दिन में जांच रिपोर्ट सौंपने के लिए निर्देश दे दिये है। ज्ञात हो कि गाजियाबाद में समय से पहले ओपीडी बंद करने वाले डॉक्टरों का मामला सामने आया है। जिसमें गाजियाबाद के एक चिकित्सालय के वीडियो का डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने संज्ञान लिया है। वीडियो में दिखाया गया है कि 1रू30 बजे ही ओपीडी से डॉक्टर गायब हो गये और नतीजतन मरीज बिना इलाज लौट गये। डिप्टी सीएम ने इस पर सक्त ऐतराज जाहिर करते हुए पांच डॉक्टरों को नोटिस जारी किया है और सीएमओ को जाँच के आदेश दिये हैं। बता दें कि सरकारी

अस्पतालों में सुबह आठ से दो बजे तक ओपीडी के संचालन का समय तय है। जबकि इमरजेंसी 24 घंटे चलती है। 27 मई को गाजियाबाद के लोनी 50 बेड संयुक्त चिकित्सालय का एक वीडियो वॉयरल हुआ। जिसमें डेढ़ बजे ओपीडी बंद कर डॉक्टरों गायब होने की तस्वीरे दिखाई गईं। सच्चाई का पता लगाने के लिए डिप्टी सीएम ने सीएमओ को मामले की जाँच के आदेश दिये हैं। इस संबंध में अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी व डिप्टी सीएम की कमेटी गठित की गई है। दो दिन में जाँच पूरी करनी है। फिलहाल प्रकरण के संबंध में अस्पताल के सीएमएस समेत पाँच चिकित्सकों से स्पष्टीकरण तलब किया गया है। इसके अलावा आगरा के फतेहाबाद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की ओपीडी में सुबह 10 बजे तक डॉक्टरों के न पहुंचने का प्रकरण सामने आया है। समय पर ओपीडी का संचालन न होने से मरीजों को असुविधा का सामना करना पड़ा था।

जिला होम्योपैथिक चिकित्साधिकारी गोण्डा निलम्बित

लखनऊ। रिश्वतखोरी के आरोप में जिला होम्योपैथिक चिकित्साधिकारी, गोण्डा डा० उर्मिला देवी को तत्काल प्रभाव से निलम्बित कर दिया गया है। उनके ऊपर श्याम नारायण सिंह फार्मासिस्ट राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सालय, बेलसर गोण्डा संबद्ध जिला होम्योपैथिक चिकित्साधिकारी कार्यालय, गोण्डा के माध्यम से रिश्वत लिए जाने एवं एक स्टोर लाइसेंस निर्गत करने हेतु रिश्वत की मांग किये जाने की प्राप्त शिकायत एवं इस संबंध में उपलब्ध आडियो रिकार्डिंग आदि शिकायतों के आरोप लगे हैं। उपलब्ध करायी गयी आख्या के दृष्टिगत उक्त आरोपों में प्रथम दृष्टया दोषी पायी गयी हैं। उनके ऊपर अनुशासनिक कार्यवाही संस्थित करते हुए उन पर आरोपों की जांच हेतु मुख्य विकास अधिकारी गोण्डा को जांच अधिकारी नियुक्त किया गया है।

जन समस्याओं का त्वरित गति से किया जाए निदान–केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने अपने–7 कालीदास मार्ग स्थित आवास पर आयोजित जनता दर्शन कार्यक्रम में विभिन्न जनपदों से आये लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं के त्वरित निस्तारण का आश्वासन दिया। उन्होने जनसुनवाई के दौरान एक–एक व्यक्ति की समस्या को पूरी गम्भीरता से सुना तथा समस्याओं के निराकरण हेतु सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने सम्बंधित अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए हैं कि समस्याओं का निराकरण इस प्रकार किया जाय कि समस्याग्रस्त व्यक्ति पूरी तरह से संतुष्ट रहें और उन्हें दुबारा कहीं भटकना न पड़े और बार –बार चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने महिलाओं, दिव्यांगों, बुजुर्गों की समस्याओं व शिकायतों को सुना और उन्हें प्राथमिकता के आधार पर संबंधित अधिकारियों को त्वरित गति से निदान करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जनता दर्शन में भूमि विवाद ,दुर्घटनाओं से संबंधित ,अवैध कब्जे, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आवंटन, स्कूल निर्माण, भूमि पट्टा, कब्जा दिलाने, अतिक्रमण हटाने,सड़क बनवाने, विजली, अभियुक्तों की गिरफ्तारी कराने, आदि से संबंधित विभिन्न समस्याएं प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोगों ने रखी। जनता दर्शन मे 2दर्जन से अधिक जिलों से कई सैकड़ा लोगों ने आकर अपनी समस्याएं रखी। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने समस्याओं के निस्तारण के सम्बंधित उच्चाधिकारियो से दूरभाष पर वार्ता भी की।

बुजुर्ग दंपत्ति ने अपने दो बेटों पर प्रताड़ित करने का लगाया आरोप,पुलिस कमिश्नर से लगाई गुहार

कानपुर। कानपुर में बुजुर्ग दंपत्ति पुलिस कमिश्नर ऑफिस न्याय की गुहार लगाने पहुंचे। बुजुर्ग दंपत्ति ने अपने दो बेटों पर आरोप लगाया कि वह उन्हें मारते–पीटते हैं। उन्हें प्रताड़ित करके घर से भगाते हैं। बुजुर्ग दंपत्ति की उम्र 70 वर्ष से अधिक है। उनका छोटा बेटा उन्हें सोमवार को पुलिस कमिश्नर ऑफिस लेकर पहुंचा। बुजुर्ग रिटायर्ड पुलिसकर्मी है, लेकिन उन्होंने कहा कि थाने में कोई सुनवाई नहीं हुई। इसलिए पुलिस कमिश्नर ऑफिस आकर शिकायत की। पुलिस कमिश्नर ने इस पूरे मामले का संज्ञान लेते हुए मामले की जांच के आदेश दिए हैं। बुजुर्ग सुरेश चंद्र मिश्रा ने बताया कि उनका मकान सचेंडी थाना क्षेत्र के अंतर्गत सचेंडी कस्बे में बना हुआ है। उन्हीं के बड़े बेटे अनिल मिश्रा और सुनील मिश्रा दोनों ही मारपीट करते हैं। उन्हें घर से भगाते हैं। उन्होंने बताया कि उनकी पत्नी कमला मिश्रा के साथ भी दोनों बेटों ने मारपीट की।

अवैध पार्किंग व फुटपाथ पर लगी दुकानों के चलते जाम के झाम में डूबा कछौना नगर

कछौना,हरदोई । प्रशासन की अनदेखी के चलते कस्बे के प्रमुख मार्ग पर पटरी दुकानदारों, ठेला लगाने वाले व मनमाने तरीके से खड़े ई रिक्शा चालकों के कारण कस्बा के मुख्य मार्ग पर अतिक्रमण है। जिसके कारण राहगीरों का आवागमन दुष्कर है। आए दिन कोई न कोई राहगीर चुटहिल हो रहा है। नगर पंचायत कछौना पतसेनी में मुख्य चौराहा से स्टेशन मार्ग के फुटपाथ पर अतिक्रमण होने के कारण आवागमन दुष्कर है। इस मुख्य मार्ग पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, कई विद्यालय, मुख्य बाजार के व्यवसायिक प्रतिष्ठान, रेलवे स्टेशन बालामऊ जंक्शन होने के कारण प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोगों का आवागमन दुष्कर है। दोनों तरफ से पटरी दुकानदारों, ठेला लगाने वालों ने कब्जा कर रखा है। नगर पंचायत द्वारा अभी तक पटरी दुकानदारों के पुनर्वास हेतु कोई ठोस कार्य योजना नहीं बनाई गई हैं। जिसके कारण पटरी दुकानदारों व ठेला लगाने वालों का आर्थिक शोषण भी होता है। वहीं कस्बे में लगभग यातायात के लिए 500 ई रिक्शा चालक मानकों को ताक पर रखकर संचालित हैं। उनके खड़े होने के लिए कोई निर्धारित स्थान नहीं है। वह सवारी के चक्कर में सड़कों पर दौड़ते रहते हैं। वह मनमाने तरीके से चलते हैं। दर्जनों नाबालिग लड़कों द्वारा ही रिक्शा संचालित किए जा रहे हैं। यह सभी क्षमता से ज्यादा सवारी बैठाते हैं। जिसके कारण भी जाम की स्थित बनी रहती है। सड़कों के दोनों तरफ बेहतर पर्यावरण व हरियाली के लगाए गए पौधों पर भवन स्वामी व दुकानदारों ने अतिक्रमण कर रखा है। ज्यादातर पौधे देखरेख के अभाव में व अतिक्रमण के कारण नष्ट हो गए हैं। मौरंग सीमेंट के ढेर भी मुख्य मार्ग पर होने से जाम की समस्या बनी रहती है। सुबह सांय को नगर वासियों को टहलने में असुविधा होती है। आम जनमानस को काफी दिक्कत उठानी पड़ रही है। जिसके चलते आए दिन सड़क हादसों के कारण लोग चुटहिल होते हैं। अतिक्रमण के कारण जाम की समस्या से नागरिकों को काफी परेशानी उठानी पड़ती है। नगर वासियों ने इस ज्वलंत समस्या के निराकरण हेतु जिला प्रशासन व नगर अध्यक्ष से गुहार लगाई है।

परीक्षा केंद्रों के लिए रवाना होती टीमें

दस जनपदों के 24 केंद्रों पर यूपी कैटेट परीक्षा आज

प्रयाग दर्पण संवाददाता

मिल्कीपुर–अयोध्या । उत्तर प्रदेश संयुक्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी प्रवेश परीक्षा मंगलवार को प्रदेश के 10 जनपदों के 24 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित होगी। प्रवेश परीक्षा कराने के लिए कृषि विश्वविद्यालय से ड्यूटी में लगे सभी कर्मचारी व अधिकारी सोमवार को तड़के रवाना हुए। 30 मई को स्नातक के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए परिक्षाएं आयोजित होगी। प्रवेश परीक्षा में किसी भी प्रकार की अनियमितता को रोकने के लिए कुलपति डा. बिजेंद्र सिंह दिशा–निर्देशन में पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। मुन्ना भाईयों पर नकेल कसने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सख्त तैयारी की गई है।

मीडिया प्रभारी आशुतोष सिंह ने बताया कि प्रवेश परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने पर सख्त से सख्त कार्रवाई होगी। सभी परीक्षा केंद्रों पर फोटोग्राफी के

साथ–साथ वीडियोग्राफी भी कराई जाएगी जिससे असहज स्थिति उत्पन्न करने वालों की पहचान की जा सके। परीक्षा केंद्रों पर आधुनिक तरीके से अभ्यर्थियों के सत्यापन कराए जाएंगे जिससे कि मुन्ना भाईयों पर पूरी तरह से नकेल कसी जा सके। अयोध्या में तीन परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं जिसमें गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, फतेहगंज (जीआईसी), गर्ल्स गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, सिविल लाइन (जीजीआईसी), एमपीएलएल आदर्श इंटर कॉलेज,धारा रोड पर परीक्षां आयोजित होंगी। स्नातक में प्रवेश के लिए परिक्षाएं अयोध्या, मेरठ बरेली लखनऊ, बांदा, आगरा, कानपुर, वाराणसी, झांसी और आजमगढ़ शहर के चयनित केंद्रों पर कराई जा रही है। कानपुर में 6, झांसी में 1, बांदा में 1, आगरा में 1, बरेली में 2, मेरठ में 3, अयोध्या में 3, आजमगढ़ में 1, वाराणसी में 2 और लखनऊ में चार परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं।

हिस्ट्रीशीटर की हत्या में दो आरोपी गिरफ्तार,पुलिस ने भेजा जेल

प्रयाग दर्पण संवाददाता

कानपुर। मूलगंज के हिस्ट्रीशीटर सैफ उर्फ भोलू जबर की हत्या का पुलिस ने सोमवार को पर्दाफाश कर दिया। पुलिस ने इस मामले में नामजद आरोपित सलमान काना और उसके साथी आतिफ को गिरफ्तार कर लिया है साथ ही अन्य हमलावरों की पहचान की गई है। सपा विधायक इरफान सोलंकी के साथी मन्नू रहमान के फुफेरे भाई भोलू जबर की 3 दिन पहले गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। भोलू मूलगंज थाने का हिस्ट्रीशीटर है। इस मामले में भोलू के भाई दानिश की ओर से सलमान काना, उसके भाई,आतिफ सहित चार को नामजद करते हुए मुकदमा दर्ज कराया गया था। डीसीपी पूर्वी ने बताया कि इस मामले में पुलिस ने सलमान व आतिफ को गिरफ्तार कर लिया है, पूछताछ में सामने आया है कि सट्टेबाजी के 20 हजार के लेनदेन में भोलू को 5 हजार

रुपये सलमान को और देने थे। पैसा मांगने पर भोलू ने सलमान के साथ गाली–गलौज की थी। इसी का बदला लेने के लिए उसने हत्याकांड को अंजाम दिया। इस प्रकरण में रविवार को एक वीडियो भी प्रचलित हुआ है, जिसमें सलमान आतिफ अपने एक दर्जन साथियों के साथ भोलू पर हमला करते दिखाई पड़ रहा था। पुलिस की पूछताछ में खुलासा हुआ कि सलमान काना,आतिफ इलाही,दयान,अमान,बब्लू सिस्टम ने मिलकर इस हत्याकांड को अंजाम दिया। डीसीपी ने बताया कि फरार अन्य आरोपियों की तलाश में दबिश दी जा रही है। गिरफ्तार किए गए दोनों आरोपियों को जेल भेज दिया गया है। इलाके में वर्चस्व कायम करने को मर्डर पकड़े गए दोनों हत्यारोपियों ने बताया कि 20 हजार के लेनदेन को लेकर विवाद तो था ही, लेकिन में अपना वर्चस्व कायम करने के लिए हत्याकांड को अंजाम दिया है।

पुलिस की जबरदस्त कार्यवाही ,नौ वारंटीयो को भेजा जेल

लालगंज,रायबरेली। प्रभारी निरीक्षक शिव शंकर सिंह की पुलिस टीम ने जबरदस्त धरपकड़ की है और कोर्ट से जारी वारंट के क्रम में नौ वारंटी मुल्जिमों को पकड़ कर जेल भेज दिया है। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि कोर्ट से सम्मन और वारंट इश्यू हुए थे ।जानकारी के बावजूद जब मुलजिम कोर्ट तारीख पेशी पर नहीं गए तो कार्रवाई की गई है, और बसंतपुर कठोइया निवासी सियाराम पुत्र गंगाराम ,बाईपास लालगंज निवासी पवन मिश्रा पुत्र शिवरतन, चिलौला निवासी सर्वेश कुमार और अमृतलाल ,पूरे नवरंग आलमपुर निवासी संतोष कुमार पुत्र भगवती ,रेवारी पसिया खेड़ा निवासी छोटेलाल और विजय कुमार , कुंडवल निवासी सुंदरलाल पुत्र महादेव सहित पूरे राना मजरे भीरा गोविंदपुर निवासी शशिकांत पुत्र विजय बहादुर को पकड़ कर जेल भेजा गया है ।सभी के खिलाफ कोतवाली लालगंज में मुकदमा दर्ज है और कोर्ट से फरार चल रहे थे।

सर्विलांस की मदद से पुलिस ने छात्र को महज 24 घंटे के भीतर रामपुर से किया बरामद

कानपुर। शहर के काकादेव में सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहे छात्र का अपहरण हो गया। परिजनों के पास फोन करके फिरौती मांगी गई। कन्नौज के ठठिया गांव के रहने वाले परिजनों ने रावतपुर थाने में एफआईआर दर्ज कराई। इसके बाद पुलिस ने छात्र को रामपुर से बरामद कर लिया है। अब पुलिस उसे लेकर कानपुर लौट रही है। छात्र से पूछताछ के बाद पुलिस पूरे मामला का खुलासा करेगी। कन्नौज के ठठिया गांव के रहने वाले रामशरण राठौर का बेटा सूरज भान (23) काकादेव में रहकर सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहा है। परिजनों ने बताया कि रविवार को वह परीक्षा देने लखनऊ गया था। इस दौरान उसका अपहरण हो गया। उसके ही मोबाइल नंबर से व्हाट्सएप कॉल करके फिरौती मांगी गई। इतना ही नहीं फिरौती की पहली किश्त छात्र के अकाउंट में ही 50 हजार रुपए सूरज के भाई ने भेजे। अपहरण करने वालों ने कहा कि फिरौती नहीं दी तो तुम्हारे भाई की हत्या कर दी जाएगी। मामले की जानकारी मिलते ही रावतपुर थाने की पुलिस अपहरण और फिरौती की एफआईआर दर्ज करके बदमाशों की तलाश में जुट गई। सर्विलांस की मदद से पुलिस ने छात्र को महज 24 घंटे के भीतर रामपुर से बरामद कर लिया है। डीसीपी वेस्ट विजय ढुल ने बताया कि छात्र को रावतपुर थाने की पुलिस टीम ने बरामद कर लिया है। उसके शरीर पर कोई भी चोट के निशान नहीं है। टीम उसे कानपुर लेकर लौट रही है। इसके बाद ही पूरे घटनाक्रम का पता चल सकेगा। छात्र का नाटकीय ढंग से अपहरण की आशंका डीसीपी वेस्ट विजय ढुल ने सोमवार को बताया कि अब तक की जांच के मुताबिक छात्र ने खुद ही नाटकीय ढंग से अपहरण की कहानी रची है। लखनऊ से उसे बेहोश करके चारबाग बस अड्डे से अपहरण करना आसान नहीं है। महज 50 हजार रुपए की फिरौती के बाद अपहरण करने वाले बैकफुट पर आ गए। छात्र के शरीर पर एक भी चोट के निशान नहीं हैं। जांच के दौरान तमाम सारे ऐसे साक्ष्य मिले हैं जिससे यह साफ हो गया कि उसका अपहरण नहीं हुआ।

संस्कार केंद्र के 6 आयाम हैः शेषधर द्विवेदी

संस्कार केंद्रों में 16 संस्कार बताने की विशेष आवश्यकता हैः अव्यक्तराम मिश्र

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। विद्या भारती से संबद्ध काशी प्रांत के रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज राजापुर, प्रयागराज में प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे के संयोजन में चल रहे सेवा शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों के 5 दिन का प्रशिक्षण वर्ग आज संपन्न हुआ। समापन समारोह के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में इलाहाबाद डिग्री कॉलेज के इतिहास विभाग से अवकाश प्राप्त डॉ अव्यक्त राम मिश्र ने कहा कि वैदिक काल में वर्णाश्रम व्यवस्था थी। उन्हीं वर्णाश्रम व्यवस्था के अंतर्गत 16 संस्कारों की मान्यता थी। हमारे उपनिषद इसके गवाह हैं। वह सोलह संस्कार विलुप्त हो गए हैं। आज के भौतिकवादी युग में हमें केवल 3 संस्कार ही दिखाई देते हैं। पहला जन्मोत्सव दूसरा वैवाहिक संस्कार और तीसरा अंत्येष्टि, इन तीनों के अलावा शेष 13 संस्कार आज की पीढ़ी से पूछा जाए तो वे इसमें अनभिज्ञ माने जाएंगे। आप तो संस्कार केंद्र चलाने वाले शिक्षक हैं। आपको कम से कम 16 संस्कार मालूम होना चाहिए क्योंकि आप संस्कार केंद्र चलाते हैं। उन्हीं सोलह संस्कारों में विद्यारंभ संस्कार

एक प्रमुख संस्कार है जिसे आप अपने केंद्रों पर कराएं संख्या में वृद्धि होगी। तत्पश्चात भारतीय शिक्षा समिति पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रदेश निरीक्षक शेषधर द्विवेदी ने संस्कार केंद्रों में पढ़ने वाले भैया बहनों को दैनिक जीवन में प्रातः से सायं तक छोटे–छोटे छात्र–छात्राओं को किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है, उन्हें कहां संस्कार की आवश्यकता है, यह भी हमें संस्कार केंद्रों पर बताने की जरूरत है। उन्होंने संस्कार केंद्रों में प्रयुक्त होने वाले छह आयामों साक्षरता, स्वास्थ्य , स्वाध्याय, समरसता, देशभक्ति और भारतीय संस्कृति की विस्तार से चर्चा करते हुए उनके महत्व को बताया। अंत में अपने अध्यक्षीय आशीर्वचन में सुप्रसिद्ध समाजसेवी मिल्कियत सिंह बाजवा ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को अपने शुभाशीष से अभिसिंचित करते हुए कहा कि संस्कार केंद्र पर आने वाले भैया बहनों को यदि हम अपनी मूल विचारधारा से जोड़ेंगे तो हमारा राष्ट्र उन्नति की ओर अग्रसर होगा। विद्यालय के प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे ने स्वागत तथा प्रबंधक एवं इलाहाबाद उच्च न्यायालय के शासकीय अधिवक्ता शिव कुमार पाल ने मंच पर उपस्थित अतिथियों एवं प्रशिक्षणार्थियों का आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय सेवा प्रमुख योगेश, काशी प्रांत के सेवा प्रमुख कमलाकर तिवारी, सह सेवा प्रमुख नरसिंह नारायण , गोरक्ष एवं नेपाल के सेवा शिक्षा संयोजक राघव, कुंदन कुमार, कपिल देव सिंह,अवधेश कुमार गुप्ता, कामाख्या प्रसाद द्विवेदी, शैलेश कुमार यादव, सुनील कुमार गुप्ता, शशि कपूर गुप्ता, प्रेम सागर मिश्रा, अनूप सिंह, प्रवीण कुमार तिवारी एवं राकेश तिवारी की उपस्थिति प्रमुख रही। कार्यक्रम का संचालन दिनेश कुमार शुक्ला ने किया।

कूलर में नशीली दवा डाल पूरे परिवार को किया बेहोश

प्रयागराज। जिले के नैनी थाना क्षेत्र के चक लाल मोहम्मद मोहल्ले में रविवार की रात दरवाजे की कुंडी तोड़कर 45 हजार रुपए समेत करीब आठ लाख के गहने, राइफल व कारतूस बदमाशों ने लूट लिया। इस दौरान शातिर बदमाशों ने कूलर में नशीली दवा डालकर कमरे में सो रहे घरवालों को बेहोश कर दिया था। सुबह होश आने पर लोगों को घटना की जानकारी हुई। मौके पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल कर लौट गई। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस मामले की जांच कर रही है। नैनी थाना क्षेत्र के चक लाल मोहम्मद मोहल्ला निवासी राजेश कुमार पटेल पुत्र रोशन लाल पटेल रविवार की रात बारात से लौटने के बाद सपरिवार कमरे में सो रहे थे। 2रू30 बजे रात वह लघुशंका के लिए उठे थे। बाद में कमरे में जाकर सो गए। उसी दौरान उनके कूलर से फुहारा निकलने लगा। वह कुछ समझ पाते इससे पहले सभी बेहोश हो गए। उसी दौरान बदमाशों ने कमरे की कुंडी तोड़कर अंदर घुस गए। अलमारी में रखा 45 हजार रुपए, आठ के कीमती सोने चांदी के आभूषण, लाइसेंसी राइफल 315 बोर और 10 कारतूस उठा ले गए।

भाजपा ने तैयार की पूरे जून माह के कार्यक्रमों की रूपरेखा

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। आगामी होने वाले लोकसभा के चुनाव के अनुरूप संगठन के द्वारा आए हुए आगामी कार्यक्रमों को लेकर भाजपा कार्यालय सिविल लाइन में बैठक आयोजित की गई। बैठक में महामंत्री कुंज बिहारी मिश्रा ने आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करते हुए वरिष्ठ पदाधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी और सभी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए नीति तैयार की। मीडिया प्रभारी राजेश केसरवानी ने बताया कि आगामी कार्यक्रम में लोकसभा के सभी विधानसभाओं में मोर्चा की संयुक्त सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा जो शहर उत्तरी विधानसभा की आरडी पैलेस में 2 जून को, शहर दक्षिणी विधानसभा की नारायण वाटिका मुट्ठीगंज में, 4 जून को और शहर पश्चिमी विधानसभा की 11 जून को बीबी गार्डन लूकरगंज में सुनिश्चित किया गया। इसके अलावा लोकसभा स्तर की जनसभा 20 जून को फूलपुर लोकसभा की जनसभा सघनगंज सोरांव विधानसभा में आयोजित की जाएगी। 18 जून को सिविल लाइन पार्टी कार्यालय में प्रेस वार्ता का

आयोजन किया जाएगा और 5 जून को सोशल मीडिया वॉलिंटियर सम्मेलन हनुमान वाटिका सुलेम सराय में होगा। 10 जून को जिला पंचायत सभागार में प्रबुद्ध वर्ग का सम्मेलन आयोजित किया जाएगा और 15 जून को आर्य कन्या डिग्री कॉलेज में व्यापारी सम्मेलन सुनिश्चित किया गया। 12 जून को संगम क्षेत्र, फाफामऊ का नया पुल एवं बक्शी बांध क्षेत्र में विकास तीर्थ का अवलोकन कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। 13 जून को पार्टी कार्यालय सिविल लाइन में वरिष्ठ कार्यकर्ता बैठक की जाएगी। विधानसभा स्तर पर आयोजित लाभार्थी सम्मेलन का आयोजन 14 जून को शहर उत्तरी विधानसभा में बेनी माधव प्रांगण दारागंज में, 17 जून को शहर दक्षिणी विधानसभा में के पी इंटर कॉलेज मुट्ठीगंज में और शहर पश्चिमी विधानसभा में 19 जून को शहाबपुर विद्यालय में आयोजित किया जाएगा।

संक्षिप्त खबरे

थाना नैनी पुलिस द्वारा 01 शातिर वाहन चोर गिरफ्तार, कब्जे से चोरी की 01 टाटा मैजिक बरामद

प्रयागराज। थाना नैनी पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त पुनीत पाठक पुत्र स्व0 लालजी पाठक निवासी अजयपुर थाना ज्ञानपुर जनपद संतरविदास नगर भदोही को मलहरा फाटक ओवरब्रिज के पास से गिरफ्तार कर कब्जे से चोरी की 01 वाहन टाटा मैजिक UP70DT1945 बरामद किया गया। उक्त बरामदगी के आधार पर मु0अ0सं0 275/2023 धारा 379 भादंवि0 में धारा 411 भादंवि0 की बढ़ोत्तरी की गयी। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त– पुनीत पाठक पुत्र स्व0 लालजी पाठक निवासी अजयपुर थाना ज्ञानपुर जनपद संतरविदास नगर भदोही, उम्र करीब 23 वर्ष बरामदगी– 01 टाटा मैजिक (वाहन संख्या UP70DT1945) सम्बन्धित अभियोग– मु0अ0सं0 275/2023 धारा 379/411 भादंवि0 थाना नैनी कमिश्नरेट प्रयागराज गिरफ्तारी ध्बरामदगी करने वाली पुलिस टीम–1.उ0नि0 संजय सिंह यादव थाना नैनी कमिश्नरेट प्रयागराज 2.का0 अनिल कुमार थाना नैनी कमिश्नरेट प्रयागराज।

थाना घूमनगंज पुलिस द्वारा 02 शातिर वाहन चोर गिरफ्तार, कब्जे से चोरी की मोटरसाइकिल बरामद

प्रयागराज। थाना घूमनगंज पुलिस द्वारा 02 अभियुक्त अजय दिवाकर उर्फ अशरफ उर्फ अजय कन्नौजिया पुत्र नरेश दिवाकर निवासी 11ध्66ध्84 आदर्श कालोनी पोगंहट थाना घूमनगंज जनपद प्रयागराज व अजय कुमार पुत्र असर्फीलाल निवासी 11ध्42ध्58 आदर्श कालोनी पोगंहट थाना घूमनगंज जनपद प्रयागराज को मुखबिर की सूचना पर पंचमलाल स्कूल के पास स्थित ट्रान्सफार्मर के बगल से गिरफ्तार कर कब्जे से चोरी की स्प्लेण्डर मोटर साइकिल बरामद की गयी। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त– 1.अजय दिवाकर उर्फ अशरफ उर्फ अजय कन्नौजिया पुत्र नरेश दिवाकर निवासी 11/66/84 आदर्श कालोनी पोगंहट थाना घ्लूमनगंज जनपद प्रयागराज, उम्र करीब 24 वर्ष 2.अजय कुमार पुत्र असर्फीलाल निवासी 11/42/58 आदर्श कालोनी पोगंहट थाना घूमनगंज जनपद प्रयागराज, उम्र करीब 22 वर्ष सम्बन्धित अभियोग– मु0अ0सं0 257/23 धारा 379/411 भादंवि0 थाना घूमनगंज कमिश्नरेट प्रयागराज बरामदगी–काले रंग की स्प्लेण्डर मोटरसाइकिल (वाहन संख्या UP70DR0453)
गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम–
1.उ0नि0 सुभाष कुमार सिंह थाना धूमनगंज कमिश्नरेट प्रयागराज
2.उ0नि0 आकाश कुमार यादव थाना धूमनगंज कमिश्नरेट प्रयागराज
3.का0 आनन्द कुमार मौर्या थाना धूमनगंज कमिश्नरेट प्रयागराज।

थाना सरायइनायत पुलिस द्वारा 01 वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज। थाना सरायइनायत पुलिस द्वारा मा0 न्यायालय ए.डी.जे. 15 इलाहाबाद के केस नं0 409/2019 धारा 323/504 भादसं0 व 3(2)(5।) SC/ST Act- से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त बबई पटेल उर्फ सौरभ पटेल पुत्र रामसूचित पटेल निवासी ग्राम रतौरा थाना सरायइनायत जनपद प्रयागराज को ग्राम रतौरा थाना सरायइनायत प्रयागराज से गिरफ्तार किया गया । नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी। गिरफ्तार वारण्टी–बबई पटेल उर्फ सौरभ पटेल पुत्र रामसूचित पटेल निवासी ग्राम रतौरा थाना सरायइनायत जनपद प्रयागराज, उम्र करीब 25 वर्ष गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम–1. उ0नि0 जितेन्द्र प्रताप यादव थाना सरायइनायत पुलिस कमिश्नरेट प्रयागराज 2. हे0का0 हरिशचन्द्र राय थाना सरायइनायत पुलिस कमिश्नरेट प्रयागराज 3. हे0का0 अजय तिवारी थाना सरायइनायत पुलिस कमिश्नरेट प्रयागराज।

यमुना में डूबी दो बहनें, मौत काफी मशक्कत के बाद पानी से निकाले गए

प्रयागराज। जमुना नगर में लालापुर थाना क्षेत्र के नौडिया तरहार गांव मैं सोमवार को यमुना नदी में डूबने से दो किशोरियों की मौत हो गई दोनों कई लड़कियों के साथ यमुना में स्नान करने के लिए गई थी इस बीच गहराई में चली जाने से डूब गई शोरगुल होने पर घाट पर मौजूद युवकों ने काफी मशक्कत के बाद दोनों के शव को बरामद किया इस घटना से दोनों परिजनों में चीख–पुकार मच गई है घाट पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।
जानकारी के अनुसार नौडिया तरहार गांव निवासी अंबरीश उर्फ दीपू द्विवेदी की पुत्री प्रिया (16) और दिनेश उर्फ पप्पू द्विवेदी की पुत्री परी (15) स्नान करने के लिए सुबह करीब 9रू30 बजे यमुना नदी के घाट पर गई थी उसके साथ गांव की और लड़कियां और महिलाएं थी स्नान के दौरान गहराई में चली जाने के कारण दोनों डूबने लगी यह देख साथ में स्नान कर रही लड़कियां ने शोरगुल मचाना शुरू कर दिया घाट पर मौजूद कुछ युवकों ने नदी में कूदकर दोनों को खोजबीन शुरू कर दी सूचना पाकर परिवार और गांव के लोग भी घाट पर पहुंच गए कई घंटों की मशक्कत के बाद दोनों का शव नदी से बरामद किया गया यह देख परिवार के लोगों का रोते–रोते बुरा हाल है।

शायर गुलरेज इलाहाबादी के निधन पर एसीए ने जताया शोक

प्रयागराज। इलाहाबाद क्रिकेट एसोसिएशन ने अपने सीनियर सेलेक्टर शमशेर अली चंदा के बड़े भाई शायर गुलरेज इलाहाबादी के निधन पर दुःख व्यक्त किया और शोक सभा करके उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। कानपुर रोड स्थित एसीए के कार्यालय में डायरेक्टर ताहिर हसन की अध्यक्षता में सोमवार को हुई शोक सभा में डायरेक्टर आरपी भटनागर, एसडी कौटिल्य, डॉ सुरेश द्विवेदी, यासर हसन व डॉ जूली ओझा, नरायन जी गोपाल, अनुराग श्रीवास्तव, राघव द्विवेदी, सत्यव्रत सहाय, सलीम अहमद, एलबी काला, सोमेश्वर पांडेय, विवेक सिंह, अंकित पांडेय आदि उपस्थित रहे।

सनातन संस्कृति को विश्व में मिलेगी एक नई पहचानः बलबीर गिरी जी महाराज

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। आज भारत के इतिहास में विश्व में सनातन संस्कृति को एक नई पहचान मिली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा नई संसद भवन का निर्माण हमारे लिए गौरवमयी है। नई संसद भवन से जिस तरह से सर्व धर्म की तरफ से प्रार्थना की गई, ये सकारात्मक ऊर्जा भारत को एक नई दिशा देगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आदर्श से युवा पीढ़ी को सीखने की जरूरत है। ये कहना है बाघंबरी मठ और बड़े हनुमान मंदिर के महंत बलबीर गिरी जी महाराज का।
श्री बड़े हनुमान मंदिर में पूजन के बाद पत्रकारों से बातचीत में महंत बलबीर गिरी जी महाराज ने कहा, आज देशवासियों के लिए गौरव का दिन है। उन्होंने कहा कि मैं प्रधानमंत्री को धन्यवाद करता हूं, उनके निर्देशन में देश की नई संसद का निर्माण हो

गया, यह उनके नेतृत्व की गंभीरता को दर्शाता है। सेंगोल को सभापति की चेयर के पास स्थापित कर न सिर्फ देश की सांस्कृतिक परंपरा को निभाया, बल्कध्कि उसको एक नया आयाम दिया है। उन्होंने कहा कि नए संसद भवन का उद्घाटन जेष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को हुआ। जो अपने आप में शुभ है। सेंगोल स्थापित को लेकर उन्होंने कहा कि महाभारत के शांति पर्व में युधिष्ठर भीष्म पितामह से राजदंड की उत्पत्ति के बारे में पूछा तो भीष्म ने बताया था कध्कि कैसे ब्रह्मा देव के अनुरोध पर महादेव स्वयं राजदंड के रूप में प्रकट हुए थे। इस तरह से सेंगोल या राजदंड–धर्मदंड स्वयं भगवान शिव का प्रतिनिधित्व करता है और हमेशा राजाओं को याद दिलाते रहते हैं कि महादेव की ओर से धर्म के धारक हैं। इस सेंगोल को संसद में स्थापित करना भारतीय संस्कृति के लिए गौरव है।

घास काट रही बालिका को साँप ने काटा, जिला अस्पताल रेफर

कुशीनगर। जनपद के तमकुहीराज थाना क्षेत्र के परसौनी खुर्द गांव निवासी एक 13 वर्षीय बालिका को घास काटने के दौरान जहरीले सांप ने डस लिया। बालिका को परिजनों ने इलाज के लिए सीएचसी तमकुहीराज ले गए जहां बालिका की हालत गंभीर होते देख जिला अस्पताल रेफर कर दिया।
जानकारी के अनुसार सोमवार की दोपहर परसौनी खुर्द गांव निवासी लवली खातून 13 बर्ष गांव के चवर में घास काटने गई थी। घास काटने के दौरान बालिका को एक जहरीले सांप ने हाथ के उंगली में डस लिया। जिसके बाद बालिका ने हिम्मत दिखाते हुए भाग रहे सांप को पकड़कर कई टुकड़ो में काट डाला। हालांकि इसके कुछ देर बाद बालिका मौके पर ही बेहोश हो गई। बालिका के साथ घास काटने गई कुछ अन्य महिलाओं ने इसकी सूचना बालिका के परिजनों को दिया। मौके पर पहुचे परिजनो ने तत्काल इलाज के लिए सीएचसी तमकुहीराज ले गए जहां बालिका की हालत गंभीर देख चिकित्सकों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

हत्या में वांछित अभियुक्त थाना पूरामुफ्ती पुलिस द्वारा गिरफ्तार, अभियुक्त की निशांदेही पर आलाकत्ल बरामद

दिनांक 13.05.2023 को थाना पूरामुफ्ती में पंजीकृत मु0अ0सं0–90/23 धारा 452/302 भादंवि0 का सफल अनावरण करते हुये थाना पूरामुफ्ती पुलिस द्वारा अभियुक्त अशोक कुमार पासी पुत्र स्व0 वंशीलाल निवासी ग्राम मर्दानपुर थाना पूरामुफ्ती जनपद प्रयागराज को दिनांक 29.05.2023 को मनौरी पब्लिक इण्टर कालेज के सामने थाना क्षेत्र पूरामुफ्ती से गिरफ्तार कर उसकी निशांदेही पर घटना में प्रयुक्त आलाकत्ल गदाला (लोहे की रॉड) बरामद किया गया। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त–आशोक कुमार पुत्र स्व0 बंशीलाल नि0 ग्राम मर्दानपुर थाना पूरामुफ्ती कमिश्नरेट प्रयागराज उम्र 34 वर्ष पंजीकृत अभियोग–मु0अ0सं0–90/23 धारा 452/302 भादंवि0 थाना पूरामुफ्ती कमिश्नरेट प्रयागराज बरामदगी– आलाकत्ल गदाला (लोहे की रॉड)
गिरफ्तारी,बरामदगी करने वाली टीम–
1.थानाध्यक्ष उपेन्द्र प्रताप सिंह थाना पूरामुफ्ती कमिश्नरेट प्रयागराज
2.वरि0उ0नि0 कैलाश चन्द्र थाना पूरामुफ्ती कमिश्नरेट प्रयागराज
3.उ0नि0 सुशील कुमार थाना पूरामुफ्ती कमिश्नरेट प्रयागराज
4.का0 राहुल यादव थाना पूरामुफ्ती कमिश्नरेट प्रयागराज
5.उ0नि0 अजीत सिंह (प्रभारी सर्विलांस सेल नगर,प्रयागराज)
6.का0 सौरभ उत्तम (सर्विलांस सेल नगर ,प्रयागराज)

नगर निगम की पहली प्राथमिकता नगर की स्वच्छताः गणेश केसरवानी

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। नवनिर्वाचित महापौर गणेश केसरवानी ने नगर निगम कार्यालय के प्रथम दिवस पर आए हुए जनता की समस्याओं को सुना और तत्काल प्रभाव से समस्याओं के निराकरण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया।
इस अवसर पर उन्होंने कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान करना हमारा प्रथम कर्तव्य है और हम विश्वास दिलाते हैं जनता की समस्याओं को तत्काल प्रभाव से निराकरण किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि आने वाले मानसून सत्र में नगर में जलजमाव से होने वाली समस्याओं को लेकर नगर निगम के अधिकारियों के साथ बैठकर समय से पहले नगर के नाले और नालियों की सफाई कराने पर जोर दूंगा। जिससे कि जलजमाव की स्थिति उत्पन्न ना होने पाए। नगर निगम की पहली प्राथमिकता नगर की स्वच्छता होगी इसके लिए वार्ड स्तर पर सफाई के लिए प्रत्येक वार्डो में

जरूरत के हिसाब से सफाई कर्मचारियों को लगाया जाएगा और महानगर की स्वच्छता के लिए जनता जनार्दन को जागरूक किया जाएगा। मीडिया प्रभारी राजेश केसरवानी ने बताया कि इसके अलावा महापौर कैंप कार्यालय कीडगंज में जनता दर्शन के अंतर्गत महापौर के द्वारा जनता की समस्याओं को सुना गया जिसमें से ज्यादातर शिकायतें जल संस्थान और क्षेत्र की स्वच्छता को लेकर रही। इस अवसर पर पार्षदगणों में मुकेश कसेरा, नीरज गुप्ता, रितेश मिश्रा, दिग्विजय सिंह, मयंक यादव और वरुण केसरवानी, राजेश केसरवानी, रमेश पासी मनीष केसरवानी, विवेक अग्रवाल, प्रमोद मोदी, आनंद सोनकर,सुनील केसरवानी, अभिषेक सोनकर आयुष अग्रहरी एवं अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रयागराज के श्रृंगवेरपुर धाम में गूंजेगी समरसता की गाथा

प्रयागराज। महाकुम्भ 2025 के आयोजन के पहले कुम्भ नगरी प्रयागराज के पौराणिक स्थलों को योगी सरकार भव्य स्वरूप देने में लगी है। श्री राम वनगमन पथ में स्थित प्रयागराज के श्रृंगवेरपुर धाम में निषादराज गुह्य सांस्कृतिक केंद्र के निर्माण से इसका सिलसिला और आगे बढेगा। सरकार ने इसके लिए आवश्यक बजट की स्वीकृति दे दी है। प्रभु श्री राम और निषादराज के मिलन की साक्षी रही श्रृंगवेरपुर की भूमि में सांस्कृतिक केंद्र के निर्माण के कार्य में अब तेजी आयेगी। योगी सरकार ने इस प्रोजेक्ट को मंजूरी देते हुए इसके लिए घ्19 करोड़ 57 लाख के प्रस्ताव की स्वीकृति दे दी है। प्रयागराज की क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी अपराजिता सिंह ने इसकी जानकारी देते हुए बताया है कि शासन की तरफ से इसकी मंजूरी मिल गई है।

जीवन ज्योति अस्पताल में शॉट सर्किट से लगी आग

प्रयागराज। शहर के एक बड़े निजी अस्पताल में सोमवार की दोपहर अचानक आग लगने से हड़कंप मच गया। आग लगने की जानकारी कर्मचारियों और मरीजों तक पहुंची तो अफरा तफरी मच गई। सूचना पर पहुंची पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर काबू पा लिया, हालांकि कोई बीफ घटना नही हो सकी। रामबाग स्थित जीवन ज्योति हॉस्पिटल में 3.35 पर अस्पताल के पीछे पार्किंग की तरफ दीवारों पर लगी ऐसी में शॉट सर्किट हो गई। जिसके बाद एक के बाद एक कई ऐसी में आग पकड़ लिया। आग लगने के बाद पूरा अस्पताल परिसर धुंए से भर गया। अस्पताल में आग की खबर से कर्मचारियों और मरीजों में हड़कंप की स्थिति बन गयी। अस्पताल प्रशासन को जानकारी होने पर पुलिस को सूचना दी गयी। जिसके बाद फायर टेंडर सीएफओ व एफएसओ सहित घटना स्थल पहुंचे। वहां ऑक्सीजन स्टोरेज के उपर इलेक्ट्रिक पैनल मे आग लगने के कारण एसी कंप्रेशर में पकड़ ली थी। जिसे हॉस्पिटल कर्मी अग्निशमन उपकरण द्वारा बुझाने का प्रयास कर रहे थे। वही फायर टेंडर द्वारा आग को मशक्कत के बाद बुझा दिया गया। आग से कोई जनहानि नही हुई है।

डीएम ने भूमि विवाद के मामलों के निस्तारण में ज्यादे तर निचले स्तर पर दिखाई जा रही निष्क्रियता पर जताई चिंता

कुशीनगर। जिला मुख्यालय स्थित कलेक्ट्रेट सभागार में सोमवार को जिलाधिकारी रमेश रंजन की अध्यक्षता व पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल की उपस्थिति में अभियोजन एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में विगत 5 माह के अंतर्गत विभिन्न न्यायालयों में निस्तारित होने वाले सभी मामलों की समीक्षा की गई तथा खराब प्रगति वाले अधिवक्ताओं के कार्यशैली में सुधार लाये जाने सहित शासन द्वारा दिये गए निर्देश के क्रम में तीव्र गति से लंबित पत्रावलियों को निस्तारण कराए जाने के निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने इस अवसर पर अवैध अतिक्रमण, नक्शा संशोधन, पट्टा मन्सूखी आदि मामलों में स्थलीय निरीक्षण कर लेखपाल दबारा लगाई जाने वाली रिपोर्ट के सम्बन्ध में समस्त उप जिलाधिकारी को निर्देशित किया गया। उन्होंने कहा कि निरीक्षण के दौरान वादी, प्रतिवादी के साथ लेखपाल का फोटोग्राफ्स आवश्यक है। जिससे कि गुणवत्ता बनी रहे। जिलाधिकारी ने कानून व्यवस्था के संबंध में अवैध खनन में संलिप्तता पाए जाने पर भी कार्रवाई किए जाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि संबंधित को नोटिस दें तत्पश्चात प्रभावी कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि उप जिलाधिकारी सहित सभी सीओ इस संबंध में प्रभावी कार्यवाही करें। उन्होंने समस्त उपजिलाधिकारी व क्षेत्राधिकारी को निर्देशित किया कि प्रोसेस को फॉलो करें तथा अवैध खनन को हर हाल में रोके। उन्होंने कहा कि थाना दिवस व समाधान दिवस में ज्यादातर मामले भूमि से संबंधित ही प्रस्तुत किए जाते हैं। इस संबंध में थाना दिवस से पूर्व चौकी इंचार्ज से भूमि से संबंधित समस्याओं की जानकारी अवश्य प्राप्त करें । उन्होंने कहा कि ज्यादे तर क्राइम के पीछे भूमि का मामला होता है जो आप सभी की निष्क्रियता से होता है। जब तक आप कार्य नहीं करेंगे तब तक मामला बढ़ता रहेगा। जिलाधिकारी ने सभी को निर्देशित किया कि अपना सिस्टम तैयार करें तथा थाने से सूचना निकालें। अगले थाना दिवस से पहले चौकी लेबल पर किस प्रकार के कितने आवेदन हैं। उसकी जानकारी अवश्य रखें। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने अवैध टैक्सी स्टैंड बस स्टैंड के रोके जाने के संबंध में तहसीलवार जानकारी लेते हुए निर्देशित किया कि पार्किंग हेतु चिन्हित भूमि पर ही वाहनों की पार्किंग हो। इसी क्रम में उप जिलाधिकारी पड़रौना व कप्तानगंज सहित हाटा में हो रहे जाम की समस्या के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही किये जाने का निर्देश दिए गए। इसी प्रकार नेशनल हाइवे पर ट्रकों की लंबी कतार में खड़े रहने पर प्रभावी कार्यवाही हेतु एआरटीओ को निर्देशित किया गया। बैठक के दौरान बाढ़ के मद्देनजर हो रहे कार्यों का निरीक्षण करने का निर्देश उप जिलाधिकारी खड्डा व तमकुहीराज को देने के साथ ही समस्त उप जिलाधिकारी को उद्यमियों के साथ तहसील स्तर पर बैठक कराए जाने का निर्देश दिए गए ताकि उद्यमियों की समस्याओं का निस्तारण समय से हो सके। पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल ने इस अवसर पर थाना दिवस, समाधान दिवस, अवैध खनन व पैमाइश के मामलों के सम्बन्ध में प्रभावी कार्यवाही हेतु समस्त क्षेत्राधिकारी को आवश्यक दिशा निर्देश दिया।

गंगा दशहरा पर भक्तों को नहीं मिल पाएगा पवित्र जल

प्रयागराज। संगमनगरी में गंगा की धारा कम होने और जलधारा सूखने से फाफामऊ से संगम के बीच गंगा नदी का स्वरूप ही बदल गया है। इससे संगम और आसपास के घाटों पर डुबकी लगाने और आचमन करने लायक भी जल नहीं रह गया है। इसे लेकर गंगा दशहरा पर श्रद्धालुओं, तीर्थपुरोहितों और संतों की चिंता बढ़ गई है। गंगा दशहरा की तैयारी पूरी हो चुकी है। गंगा और संगम किनारे आयोजित होने वाल उत्सव में प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य भी भाग लेंगे। गंगा दशहरा के लिए यमुना में सैकड़ों क्यूसेक पानी का डिस्चार्ज बढ़ाया गया है। पर्व से पहले गंगा में जल तेजी से घट रहा है। वर्तमान में कानपुर बैराज से सिर्फ 1650 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। मथुरा की तरह प्रयागराज में भी भक्त गंगा में डिस्चार्ज बढ़ाने की उम्मीद लगाए थे, लेकिन हो गया उल्टा बीते 23 मार्च को कानपुर बैराज से गंगा में 2050 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा था। सात दिन में बैराज से गंगा में डिस्चार्ज 500 क्यूसेक घट गया। सिंचाई विभाग की ओर से जारी किए गए आंकड़ों में नरोरा बैराज से एक हजार क्यूसेक पानी गंगा में छोड़ा जा रहा है। सिंचाई विभाग के इंजीनियरों का कहना है कि कानपुर बैराज से गंगा में डिस्चार्ज बढ़नी की संभावना नहीं है। क्योंकि हरिद्वार, नरोरा और कानपुर बैराज में पानी नहीं है। अब बारिश के बाद ही गंगा में बैराजों से डिस्चार्ज और जलस्तर बढ़ेगा।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1–ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित।

–ः संस्थापक :–

स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा

संपादक

स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)
मोबाइल नंबर 9450475366
Email
prayagdarpan@gmail.com
R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804

इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।